04 - जीवन की खूबसूरती को दिखाती है 'जादूगरनी'

05 - वेदवाणी, विद्वान, शिल्प और अध्ययनरत कलाकार

06 - दिवसीय कृषि विज्ञान मेला एवं जैविक हाट का शुभारंभ

07 - 1950 के दशक का सिनेमा और आदर्शवाद

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 15 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 191, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

ओंकारेश्वर, नर्मदातट... देवता किसकी शरण लें

फोटो: सोनल

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

दांव न होंगे घाव न होंगे
सुन्दर मधुर स्वभाव न होंगे
कोई न कोई अभाव न होंगे
प्रतिभा और प्रभाव न होंगे
ऐसे कोई दिन ना होंगे।

राज न होंगे रंक न होंगे
जब विषधर के डंक न होंगे
धूल न होगी पंक ना होंगे
रण में वीर निशंक न होंगे
ऐसे कोई दिन ना होंगे।

जिस दिन कोई मोह न होगा
मिलन के बाद बिछोह न होगा
मृत्यु न होगी जन्म न होगा
प्रीत न होगी द्रोह न होगा
ऐसे कोई दिन ना होंगे।

– राजीव शर्मा

एक के बाद एक चुनाव हार रही है कांग्रेस : पीएम मोदी

- पीएम मोदी बोले- हार की हताशा से भरी पार्टी ने देश के खिलाफ खोला मोर्चा
- कहा- जहां से कांग्रेस की सोच खत्म होती है, वहां से हमारा काम शुरू होता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पार्टी पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने असम के दौरे पर शिलांग-सिचलर कॉरिडोर का भूमि पूजन किया। इसी के बाद उन्होंने सिलचर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस वालों के दिमाग का ताला जहां बंद होता है, वहां से हमारा काम शुरू होता है। कांग्रेस एक के बाद एक चुनाव हार रही है, अब

निकट भविष्य में कांग्रेस खुद के पराजय की सेंचुरी करने वाली है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी के अनेक दशकों तक कांग्रेस की सरकारों ने नॉर्थ-ईस्ट को दिल्ली से और दिल से, दोनों से ही दूर रखा। कांग्रेस ने नॉर्थ-ईस्ट को एक तरह से भुला दिया था, लेकिन बीजेपी की डबल इंजन सरकार ने नॉर्थ-ईस्ट को ऐसे कनेक्ट किया है कि आज हर तरफ इसकी चर्चा है।

पीएम मोदी ने मुख्य विपक्षी पार्टी को जमकर सुनाया- पीएम मोदी ने कहा कि आज नॉर्थ-ईस्ट भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी का केंद्र है। दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत को जोड़ने वाला सेतु बन रहा है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि जैसे कांग्रेस ने नॉर्थ ईस्ट को अपने हाल पर छोड़ दिया था।

बिहार में हम सभी 5 सीटें जीत लेंगे

- *जेडीयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने किया बड़ा दावा*

पटना (एजेंसी)। जनता जल यूनाइटेड (जदयू) के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने राज्यसभा चुनाव को लेकर कहा कि परसों शाम दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। इसमें डिबेट क्या करना है। उन्होंने कहा कि पांच की पांचों सीट एनडीए जीत रही है। चार सीट पर जीत पक्की है। पांचवें के लिए हम लोगों के पास अपना नंबर है और अन्य लोग भी सहयोग करेंगे। उपेंद्र कुशवाहा के आवास पर बैठक को लेकर संजय झा ने कहा कि उपेंद्र कुशवाहा के यहां विधानमंडल की मीटिंग है। कल विजय चौधरी के आवास पर बैठक होगी। एनडीए के विधायक एक साथ मिलेंगे। 16 तारीख को होने वाले चुनाव की तैयारी पूरी है। पांचों सीट एनडीए बड़े मार्जिन से जीत वाली है। छोटी जीत नहीं होगी। विपक्ष के दावे पर उन्होंने कहा कि विपक्ष क्यों दावा नहीं करेगा। विपक्ष तो चुनाव में भी सरकार बनाने का दावा कर रहा था। वो शपथ ग्रहण का दावा कर रहे थे। हम लोगों को जो जानकारी मिल रही है, उससे बड़े अंतर से हम लोग जीत रहे हैं। बिहार के अगले मुख्यमंत्री को लेकर भी संजय झा ने बात की।

शुजालपुर में 162 विवाह, 38 निकाह संपन्न, सीएम ने दिया आशीर्वाद

सामाजिक सद्भाव बढ़ाने का सशक्त माध्यम हैं सामूहिक विवाह : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी संस्कृति के मूल में सामाजिकता है, सद्भाव है और इस सद्भाव को बढ़ाने में सामूहिक विवाह सम्मेलन एक बड़ा ही मजबूत और कारगर माध्यम है। बेटियों के पाणिग्रहण संस्कार से बड़ा पुण्य का, कोई दूसरा काम हो ही नहीं सकता। पहले बेटी के जन्म होने के साथ ही उसके परिवार को बेटी की शादी की चिंता सताती थी, लेकिन अब मुख्यमंत्री कन्या

विवाह/निकाह योजना के माध्यम से मध्यप्रदेश सरकार बेटियों का कन्यादान और विदाई कर रही है। इस योजना से प्रदेश के गरीब-वंचित और जरूरतमंद परिवारों की बेटियों का घर बस रहा है। जन्म से लेकर पढ़ाई, नौकरी, मातृत्व और विवाह तक हमारी सरकार हर कदम पर बहनों-बेटियों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि मितव्ययिता बेहद जरूरी है। इसलिए शादी-ब्याह में होने वाले फिजूलखर्चों से हमेशा बचें। अपने बेटे-बेटियों का विवाह/निकाह सामान्य समारोह या सामूहिक विवाह सम्मेलन में ही करें। इससे जो धन बचे, वह अपने बच्चों के बेहतर जीवन के लिए बचाकर रखें। मुख्यमंत्री ने बताया कि उन्होंने अपने पुत्र का विवाह भी सामूहिक विवाह सम्मेलन में ही कराया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को मुख्यमंत्री निवास से शुजालपुर (जिला शाजापुर) में हुए सर्व धर्म सामूहिक विवाह सम्मेलन को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार बेटियों के सम्मान, इनके सशक्तिकरण और सामाजिक सुरक्षा के लिए सदैव ही प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने सभी नवविवाहित जोड़ों को बधाई और सफल वैवाहिक जीवन की शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया। सम्मेलन में 200 बेटियों का सामूहिक विवाह/निकाह सम्पन्न हुआ। इसमें 162 बेटियों का विधि-विधान से विवाह और 38 बेटियों का कबूलियत निकाह कराया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर नवविवाहित जोड़े को मंगलाशीष के तौर पर सरकार की ओर से गृहस्थी के लिए 49-49 हजार रूपए दिए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सामूहिक विवाह सम्मेलन वर-वधु को जन्म-जन्मांतर तक साथ देने की अमरता की बेला का उत्सव है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि यह सामूहिक विवाह सम्मेलन आगे और भी अधिक विशाल बनेगा तथा सभी जरूरतमंद परिवारों के लिए सबसे बड़े मददगार के रूप में अपनी पहचान बनाएगा।

उच्च शिक्षा, आयुष एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने विवाह सम्मेलन में कहा कि हमारी सरकार ने समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाएं बनाई हैं। सामाजिक सुरक्षा और सद्भाव के लिए मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है। आज के दौर में विवाह आयोजनों में फिजूलखर्ची बढ़ रही है।

ईरान की धमकी

वॉरशिप पर हमले का बदला लेंगे

- *भारत से लौट रहे जहाज को 4 मार्च को अमेरिका ने डुबोया था, 104 नौसैनिक मारे गए थे*

तेल अवीव/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग का शनिवार को 15वां दिन था। इस बीच ईरान की सेना के प्रमुख अमीर हातमी ने कहा है कि हिंद महासागर में ईरान के वॉरशिप पर हुए अमेरिकी हमले का जवाब जरूर दिया जाएगा। इस हमले में ईरान के वॉरशिप आईआरआईसी डेना के 104 नौसैनिकों की मौत हो गई। ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी के मुताबिक जहाज भारत में हुए 2026 नौसैनिक सैन्य अभ्यास को पूरा करके हिंद महासागर से वापस ईरान लौट रहा था, तभी उस पर हमला हुआ। उस समय जहाज किसी लड़ाई में शामिल नहीं था। ईरान के युद्धपोत आईआरआईएस डेना पर हमला 4 मार्च 2026 की सुबह हुआ था। यह हमला हिंद महासागर में श्रीलंका के गाले शहर के पास समुद्र में किया गया था।

ईरान में अब तक 32 लाख लोग घर छोड़ चुके- ईरान पर हमलों के बाद पूरे इलाके में बड़ी संख्या में लोग अपने घर छोड़कर दूसरी जगह जा रहे हैं। एजेंसी के मुताबिक ईरान में अब तक करीब 32 लाख लोग अस्थायी रूप से अपने घर छोड़ चुके हैं। इनमें से ज्यादातर लोग तेहरान और दूसरे बड़े शहरों से देश के उत्तरी इलाकों की ओर जा रहे हैं। लेबनान में भी हालात खराब होने के बाद 8 लाख 22 हजार से ज्यादा लोगों ने खुद को विस्थापित के तौर पर दर्ज कराया है। इसके अलावा सीरिया में भी लोगों का आना जारी है। अधिकारियों के मुताबिक 78 हजार से ज्यादा लोग लेबनान से सीरिया पहुंचे हैं।

अवैध मतांतरण रोकने के लिए विधानसभा में सख्त बिल पेश

धोखाधड़ी के जरिए धर्मांतरण पर लगेगी लगाम

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को जबरदस्ती, धोखाधड़ी, प्रलोभन या विवाह के जरिये मतांतरण पर रोक लगाने वाले महाराष्ट्र धर्म स्वतंत्रता अधिनियम, 2026 को विधानसभा में पेश किया। गृह राज्यमंत्री पंकज भोयर ने यह विधेयक पेश किया। इस विधेयक का मकसद धर्म की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार को बनाए रखना, गैरकानूनी मतांतरण के विरुद्ध कानूनी सुरक्षा कवच बनाना और मतांतरण की प्रक्रिया के लिए नियामक ढांचा तैयार करना है। विधेयक में गैरकानूनी मतांतरण में शामिल लोगों के लिए कड़ी सजा और जुर्माने का प्रावधान है। विधेयक के मसौदे के अनुसार इसका मकसद गलतबयानी, जोर-जबरदस्ती, अनुचित प्रभाव, दबाव, प्रलोभन या शादी के जरिये किए जाने वाले गैरकानूनी

मतांतरण को रोकना है। सरकार का कहना है कि ऐसी हरकतों से सामाजिक सौहार्द्र बिगड़ सकता है और किसी व्यक्ति के अपनी मर्जी से किसी भी धर्म को मानने व उसका पालन करने के संवैधानिक अधिकार को ठेस पहुंच सकती है। मसौदे के अनुसार, किसी भी व्यक्ति या संस्था को उपहार, पैसा, रोजगार, मुफ्त शिक्षा, शादी का वादा, बेहतर जीवनशैली या दैवीय उपचार का प्रलोभन देकर किसी व्यक्ति का मतांतरण करने या उसका प्रयास करने की अनुमति नहीं होगी; इन सभी चीजों को प्रलोभन की श्रेणी में रखा गया है। यह विधेयक बिल शादी या शादी के वादे के जरिये मतांतरण पर भी रोक लगाता है, यदि ऐसे कृत्यों में किसी प्रकार का प्रलोभन, जबरदस्ती या छल-कपट शामिल हो।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 15 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

शिवालिक के बाद अब नंदा देवी भी होर्मुज से निकला

● इंडियन नेवी की सुरक्षा में 46,000 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर आ रहा भारतीय जहाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में एलपीजी संकट के बीच बहुत बड़ी राहत की खबर है। ईरान की ओर से भारतीय झंडे वाले टैंकरों को होर्मुज स्ट्रेट से सुरक्षित निकलने देने की अनुमति के बाद भारत के दूसरे एलपीजी जहाज नंदा देवी ने भी युद्ध से प्रभावित होर्मुज जलडमरूमध्य को सुरक्षित पार कर लिया है। एलपीजी टैंकर शिवालिक के बाद नंदा देवी दूसरा जहाज है, जिसे ईरान ने कूटनीतिक चर्चाओं के बाद होर्मुज स्ट्रेट से

सुरक्षित निकलने दिया है। नंदा देवी 46,000 मीट्रिक टन एलपीजी लेकर भारत आ रहा है और होर्मुज स्ट्रेट से निकलने के बाद इसे भारतीय नौ सेना के जहाज द्वारा एस्कॉर्ट किया जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि इंडियन नेवी का जहाज नंदा देवी को भारत तक सुरक्षित लेकर आएगा। उम्मीद है कि यह जहाज अगले दो दिनों में भारत पहुंच सकता है। हालांकि, अभी यह जानकारी नहीं है कि यह मुंबई आएगा या गुजरात के कांडला बंदरगाह जाएगा। इससे पहले एक और एलपीजी टैंकर शिवालिक को भी इसी तरह से सुरक्षित होर्मुज स्ट्रेट पार करने दिया गया।

अमेरिका देखता रह गया ईरान ने कर दिया 'खेला'

● भारत-श्रीलंका से अपने 267 नौसैनिकों को ले उड़ा शिया देश

तेहरान (एजेंसी)। ईरान ने भारत में फंसे अपने 180 नौसैनिकों को सुरक्षित निकाल लिया है। ये सभी ईरानी युद्धपोत आईआरआईएस डेना पर तैनात थे। इस ईरानी जहाज में खराबी आने के बाद भारत ने कोच्चि में उसे शरण दी है। यही नहीं ईरान ने श्रीलंका से अपने 84 नौसैनिकों के शव को भी निकाल लिया है। ये सभी अमेरिकी परमाणु पनडुब्बी के टारपीडो हमले में मारे गए थे। ईरानी नौसैनिक डेना युद्धपोत

पर सवार थे जो भारत में नौसैनिक अभ्यास से लौट रहा था और श्रीलंका के पास समुद्र में अमेरिकी हमले का शिकार हो गया था। ईरानी नौसेना का एक और जहाज बुशहर अभी श्रीलंका में त्रिकोमाली बंदरगाह पर है जहां उसके इंजन को ठीक किया जा रहा है। ईरान ने इन सभी नौसैनिकों और शवों को निकालने के लिए स्पेशल चार्टर्ड प्लेन का इंतजाम किया था। अमेरिका और इजरायल के साथ जारी युद्ध के बीच ईरान ने अपने नौसैनिकों को निकालने के लिए एक खास रास्ता चुना था। श्रीलंकाई एक्सपर्ट रंगा श्रीलाल के मुताबिक ईरानी चार्टर्ड विमान सबसे पहले श्रीलंका गया और वहां से 84 नौसैनिकों के शव लेने के बाद मट्टाला एयरपोर्ट से उड़ान भरी।

मोदी की रैली से पहले कोलकाता में संग्राम

● भाजपा-टीएमसी कार्यकर्ताओं में झड़प, एक दूसरे पर मारे पत्थर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के कोलकाता में पीएम मोदी की रैली से पहले भाजपा और टीएमसी कार्यकर्ताओं में विवाद हुआ है। गिरीश पार्क एरिया में दोनों ग्रुप ने एक-दूसरे पर पत्थरबाजी की। पुलिस ने भीड़ को खदेड़ा। पश्चिम बंगाल में उद्योग, वाणिज्य और उद्यम मंत्री शशि पंजा ने आरोप लगाया कि झड़प के दौरान मुझ पर ईंट मारी गई। भाजपा गुंडा नहीं है, हत्यारी है। मंत्री पंजा का यहीं पर घर है। जानकारी के अनुसार, बीजेपी और टीएमसी, दोनों ही पार्टियों के

कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे पर पत्थर फेंके। बीजेपी ने दावा किया कि पीएम मोदी की रैली में शामिल होने के लिए गिरीश पार्क इलाके से गुजरते रही बीजेपी कार्यकर्ताओं की बस पर हमला किया गया। बीजेपी कार्यकर्ताओं का आरोप है कि जब हिंसा भड़की, तो पुलिस मूकदर्शक बनी खड़ी रही। एक बीजेपी कार्यकर्ता ने बताया कि हम उस बस में सवार थे, जिस पर पत्थरों से हमला किया गया। उन्होंने कहा कि इस हमले में हमें चोटें आईं।

बहुत हो गई छुट्टी! वीकेंड में भी करना पड़ सकता है काम

● सांसदों को लेकर मोदी सरकार का नया प्रस्ताव हो गया तैयार

अब शनिवार और रविवार को भी चलेगी संसद की कार्यवाही!

नई दिल्ली (एजेंसी)। साल 2026-27 का आम बजट इस बार रविवार को पेश हुआ, क्योंकि 1, फरवरी को रविवार था। ऐसे ही लगता है कि बजट सत्र के आखिर में भी सांसदों को अपना वीकेंड संसद में ही गुजारना पड़ सकता है। इस साल बजट सत्र 28 जनवरी से शुरू हुआ था और 2 अप्रैल तक चलना है। जानकारी के अनुसार इस साल बजट सत्र के दूसरे हिस्से में कई पर्व-त्योहारों की वजह से जो संसदीय कार्य नहीं हो पाएंगे, सरकार उसे शनिवार और रविवार (28 और 29 मार्च) को

संसद बुलाकर पूरा करना चाहती है। इस मामले की जानकारी रखने वाले लोगों का कहना है कि केंद्र सरकार की ओर से इस तरह का प्रस्ताव दिया गया है, क्योंकि आने वाले दिनों में गुड़ी पड़वा, उगादी, ईद और राम नवमी जैसे त्योहार आने वाले हैं।

● **बजट सत्र का पूरा उपयोग करना चाहती है सरकार-** बजट सत्र का दूसरा हिस्सा 9 मार्च को शुरू हुआ है और यह 2 अप्रैल तक आयोजित किया गया है। केंद्र के प्रस्ताव की जानकारी रखने वाले ने बताया है, इसी वजह से यह प्रस्ताव रखा गया है कि 28 और 29 मार्च को कार्यकारी दिवस रखा जाए, ताकि समय की भरपाई हो सके और बजट सत्र का अधिकतम लाभ उठाया जा सके।

● कैथल पहुंचे यूपी के सीएम आदित्यनाथ, बोले-समर्थन करना चाहिए

जिस देश की संत शक्ति मजबूत उसे कोई नहीं हरा सकता: योगी

कैथल (एजेंसी)। कैथल में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सोंगल गांव स्थित सिद्ध बाबा मुकुट नाथ मठ में पहुंचे। उनके आगमन को लेकर जिला प्रशासन की ओर से कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उनका सौभाग्य है कि उनको बाबा मुकुट नाथ के दर्शन करने का अवसर मिला। जीते जी तो सम्मान देना ही है, गुरुओं को बाद में भी सम्मान देना चाहिए। सिकंदर का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि गुरुओं के सामने तो सिकंदर जैसे विजेताओं को भी नतमस्तक होना पड़ा। भारत में संतों की परंपरा रही है कि उन्होंने अपने आपको राष्ट्र के प्रति समर्पित किया है। संतों हर जगह सम्मान किया जाता है। पंजाब और हरियाणा में तो संतों की काफी लंबी परंपरा रही है। संत शक्ति जागरुक होगी तो कोई भी ताकत देश धर्म को झुका नहीं सकती। जो लोग देश हित में काम कर रहे हैं, उनका समर्थन करना चाहिए।

● **1600 वर्ष पुराना धार्मिक स्थल-** इस दौरान महंत पीरशेरनाथ ने बताया कि सिद्ध बाबा मुकुट नाथ मठ क्षेत्र का एक प्राचीन धार्मिक स्थल है, जो लगभग 1600 से 1700 वर्षों से श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना हुआ है। यह स्थान सिद्ध पुरुष बाबा मुकुट नाथ की तपस्थली माना जाता है, जहां उनकी स्मृति में निरंतर ज्योति प्रज्वलित रहती है। मठ परिसर में अब तक के 17 महंतों की समाधियां स्थित हैं, जिनकी प्रतिदिन पारंपरिक तरीके से गाय के गोबर से लिपाई की जाती है।

अडाणी पावर प्लांट में आगजनी, गाड़ियों में की तोड़फोड़, कर्मचारी को पीटा

सिंगरौली में लेबर की मौत पर भड़के, काम छोड़ लौटे कई मजदूर

सिंगरौली (नप्र)। सिंगरौली जिले के माडा थाना क्षेत्र के बधौरा स्थित अडाणी पावर प्लांट में शनिवार सुबह मजदूर की मौत के बाद जमकर हंगामा हो गया। गुस्साए मजदूरों ने प्लांट परिसर में तोड़फोड़ करते हुए आग लगा दी। सामने आए वीडियो में दूर से काले धुएं का बड़ा गुबार नजर आ रहा है। प्लांट के अंदर एक साइट के नीचे भी आग लगी हुई है।

हालात को काबू में करने के लिए मौके पर भारी पुलिस बल और प्रशासनिक अधिकारी तैनात किए गए हैं। जानकारी के अनुसार, प्लांट में काम करने वाले मजदूर लल्लन सिंह की शुक्रवार देर रात अचानक तबीयत बिगड़ने से मौत हो गई थी। मृतक मूल रूप से झारखंड के गढ़वा जिले का रहने वाला था और लंबे समय से इसी प्लांट में काम कर रहा था।

मजदूर की मौत की खबर फैलते ही साथी मजदूरों में आक्रोश फैल गया। उन्होंने शव छिपाने का आरोप लगाकर हंगामा शुरू कर दिया। बताया जा रहा है कि ये

अफवाह भी फैली कि मजदूर लल्लन की ऊंचाई से गिरने के कारण मौत हुई है।

कंपनी प्रबंधन और जिला प्रशासन का दावा है कि मजदूर की मौत देर रात हार्ट अटैक से हुई। कंपनी के अंदर स्थिति तनावपूर्ण है। मजदूरों ने एक दर्जन से अधिक गाड़ियों को क्षतिग्रस्त किया और पलट दिया। पुलिस चौकी प्रभारी की गाड़ी में भी तोड़फोड़ कर पलटा दी।

प्रशासन बोला- मामले की निष्पक्ष जांच की जाएगी- पावर प्लांट के अंदर मजदूर की निष्पक्ष जांच और साथी मजदूर की मौत का कारण स्पष्ट करने की मांग कर रहे थे। इस पर प्रशासन ने उन्हें भरोसा दिया है कि पूरे मामले की निष्पक्ष तरीके से जांच होगी। कोई दोषी पाया जाएगा उसपर कार्रवाई की जाएगी। अगर प्रबंधन की तरफ से कोई लापरवाही हुई है तो उसकी भी जांच होगी। इसके बाद मजदूर शांत हुए।

एक हजार से ज्यादा मजदूर अभी प्लांट के अंदर- सिंगरौली बधौरा पावर प्लांट में हुए हादसे के बाद करीब 200 से ज्यादा पुलिस बल मौके पर तैनात है, वहीं मौके पर एसडीएम, तहसीलदार, एडिशनल एसपी सहित कई थानों का पुलिस बल भी तैनात था। कंपनी में 10 हजार से ज्यादा मजदूर काम कर रहे थे, जिनमें से 8 से 9 मजदूर घटना होने के बाद अपना-अपना सामान लेकर प्लांट के बाहर निकल गए।

अमेरिका के थाड बैटरी हटाते ही किम जोंग ने दिखाई ताकत

● दागी 10 बैलिस्टिक मिसाइल

सियोल (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में जारी जंग के बीच अब पूर्व एशिया में तनाव बढ़ने की खबर आ रही है। दक्षिण कोरिया की सेना ने बताया कि शनिवार को उत्तर कोरिया ने पूर्वी सागर की और लगभग 10 बैलिस्टिक मिसाइलें दागी हैं। यह शक्ति प्रदर्शन ऐसे समय में किया गया है जब अमेरिकी सेना दक्षिण कोरिया के साथ के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास कर रही है। जापान ने भी उत्तर कोरिया के मिसाइल दागे जाने की पुष्टि की और बताया कि यह उसे विशेष आर्थिक क्षेत्र के बाहर समुद्र में गिरी। दक्षिण कोरिया के जॉइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने बताया कि मिसाइलें उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंगयांग के पास एक इलाके से दागी गई थीं। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि वे कितनी दूर तक गईं।

कांग्रेस गरीब पार्टी, लेकिन उसके नेता बहुत अमीर: राहुल

काशीराम की जयंती पर कांग्रेस नेता ने अपनों को भी घेरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता विपक्ष और मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को लखनऊ में संविधान सम्मेलन को संबोधित किया।

इस दौरान उन्होंने अपनी ही पार्टी के नेताओं को निशाने पर लिया और कहा, कांग्रेस गरीब पार्टी है लेकिन उसके जो बड़े-बड़े नेता हैं, वे सब बहुत अमीर हैं। उन्होंने कहा कि हम अमीर पार्टी होना ही नहीं चाहते क्योंकि जिस दिन कांग्रेस अमीर बन जाएगी, वह भारतीय जनता पार्टी बन जाएगी। गांधी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का यह डिजाइन महात्मा गांधी के दौर से ही है। उन्होंने कहा हमें गरीब पार्टी ही चाहिए।

लखनऊ में मान्यवर कांशीराम की जयंती पर आयोजित कांग्रेस के संविधान सम्मेलन में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पार्टी की कमियों और सामाजिक बदलाव की राजनीति पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस में कुछ कमियां रहीं, जिसकी वजह से बहुजन आंदोलन को मजबूती मिली और कांशी राम राजनीति में सफल हो पाए।

नहीं होगा अकाली-भाजपा गठबंधन

● शाह बोले-2027 में बीजेपी की ही सरकार बनेगी ● 2 साल में हम नशे को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे

मोगा (एजेंसी)। पंजाब में विधानसभा चुनाव- 2027 से पहले बीजेपी ने शनिवार को मोगा में बदलाव रैली की। इसमें केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पहुंचे। वह केसरी रंग की पगड़ी बांधकर मंच पर पहुंचे। जोरदार नारेबाजी के साथ उनका स्वागत किया गया। रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि पंजाब में भाजपा अपनी सरकार बनाएगी। गृहमंत्री के इस बयान से अकाली दल के साथ गठबंधन की अटकलों पर विराम लग गया। गृहमंत्री ने वादा किया कि यदि पंजाब में भाजपा सरकार बनी तो 2 साल में ही नशे को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे। वहीं, रैली में आने से पहले शाह ने ट्वीट कर कहा- पंजाब का हर व्यक्ति बदलाव चाहता है। क्योंकि जवानों, किसानों और मेहनतकश लोगों के लिए प्रसिद्ध पंजाब की पवित्र भूमि को आप-दा सरकार ने करप्शन, ड्रग्स और अपराध में डुबो दिया है। रिमोट कंट्रोल वाली आप-दा सरकार में पंजाब सुरक्षित नहीं है।

● **गुरु तेग बहादुर न होते तो देश में कोई हिंदू न होता-** गृहमंत्री ने कहा- जो मेरे सिर पर जो पगड़ी दिख रही है, वह पूरे भारत पर गुरु घर के कर्ज का प्रतीक है। अमर बलिदानी गुरु तेग बहादुर जी हिंद की चादर कहे गए। उन्होंने कश्मीरी पंडितों की रक्षा के लिए अपना जीवन कुर्बान किया। मैं कहना चाहता हूं कि अगर गुरु तेग बहादुर न होते तो देश में कोई हिंदू बचा न होता।

● **हम होते तो करतारपुर साहिब पंजाब में होता-** शाह ने कहा- 1984 के सिख दंगों के खिलाफ हमारी सरकार ने 350 केस दर्ज किए। कांग्रेस ने एक भी नेता जेल में नहीं डाला। हमने डाला। हर सिख दंगा पीड़ित परिवार को 5 लाख का मुआवजा हमारी सरकार ने दिया। अफगानिस्तान और पाकिस्तान से जो सिख बचकर आए, उन्हें नागरिकता हमने दी। करतापुर कोरिडोर हमने बनाया। जब बंटवारा हुआ, हम उस समय होते तो करतारपुर साहिब को जाने न देते। शाह ने कहा- एएपी सरकार और राहुल बाबा (राहुल गांधी) किसानों को गुमराह कर रहे हैं।

रसोई गैस किल्लत

मंदिरों का अन्नदान रुका, छात्रों की रोटी पर भी आफत

● उत्तर से दक्षिण तक ढाबे-होटल में अब खाना हुआ महंगा ● हॉस्टल-मंदिर में बदला मेन्यू, पूरे देश में पड़ रहा है असर

कोलकाता/चेन्नई (एजेंसी)। ईरान, अमेरिका और इजराइल के बीच चल रही लड़ाई के कारण पूरे देश में एलपीजी सिलेंडर या रसोई गैस की किल्लत हो गई है। एलपीजी की कमी ने लोगों की जिंदगी को मुश्किल में डाल दिया है।

देश के हर हिस्से से ब्लैक मार्केटिंग की खबरें आ रही हैं। रेस्टोरेंट और होटल वालों ने चाय-कॉफी समेत एलपीजी से पकने वाले फूड आइटम्स के रेट बढ़ा दिए हैं। हॉस्टल और मेस चलाने वालों ने मेन्यू को छोटा कर दिया है। कई जगह मेन्यू बदल दिए गए हैं। मुफ्त भोजन कराने वाले मंदिरों और गुरुद्वारों में इसका असर दिखने लगा है।

● **तमिलनाडु में चाय- कॉफी मंहगी, कमर्शियल सिलेंडर 5000 रुपये में-** रिपोर्ट के मुताबिक तमिलनाडु में घरेलू एलपीजी सिलेंडरों की ब्लैक मार्केटिंग के कारण 1400 रुपये का कमर्शल सिलेंडर 2800 रुपये में बिक रहा। तमिलनाडु में कंज्यूमर हेल्पलाइन पर होटलों और टी-स्टॉल पर ज्यादा कीमत वसूलने के 70 से ज्यादा औपचारिक शिकायतें मिली हैं। चेन्नई में चाय-कॉफी के रेट बढ़ गए हैं। मोगाप्पैर और अन्ना नगर में एक गिलास चाय की कीमत 12 रुपये से बढ़ाकर 15 रुपये और कॉफी की कीमत 18 रुपये हो गई है।

● **कर्नाटक-केरल में भी असर, तेलंगाना के मंदिर में अन्नदान बंद-** दक्षिण भारतीय राज्यों के होटल एसोसिएशन का कहना है कि ईंधन की कमी के कारण केरल में लगभग 40 फीसदी और कर्नाटक में 30 फीसदी फूड स्टॉल और होटल बंद हो गए हैं। केरल के तिरुवनंतपुरम के चालाई बाजार इलाके में एक चोर को एक होटल से कमर्शियल सिलेंडर चुराकर ले जाते हुए देखा गया। तेलंगाना के सिकंदराबाद में 200 साल पुराना मशहूर श्री गणेश मंदिर अब अन्नदान और प्रसाद बांटना बंद कर चुका है। पुणे के श्री शिरडी साईं मंदिर में भी एलपीजी का स्टॉक 10 दिनों का बचा है। सोलर एनर्जी के सहारे यहां भंडारा चल रहा है। यहां भी मेन्यू बदले गए हैं।

● **कई मिठाइयां गायब, लकड़ी के चूल्हों पर पक रही बिरयानी-** कोलकाता में तेज आंच पर बनने वाली मिठाइयों पर एलपीजी किल्लत का असर पड़ा है। जिन दुकानदारों में रोजाना 10 कमर्शियल सिलेंडरों की खपत होती थी, उन्हें दो सिलेंडर से काम चलाना पड़ रहा है। लौंग लत्ता, कालोजाम, पंतुआ, दरबेश जैसी मिठाइयां दुकानों पर नहीं मिल रही हैं। कोलकाता के कई रेस्टोरेंट के मेन्यू से हांडी बिरयानी, मटन रेजाला और दाल मखनी जैसी डिशें भी गायब हो गई हैं, क्योंकि इन्हें पकाने में ज्यादा समय लगता है। कई मशहूर रेस्टोरेंट ने इलेक्ट्रिक कुकिंग और लकड़ी के चूल्हों का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। शहर में डीजल वाले स्टोव की मांग फिर से लौट आई है। ओल्ड चाइना बाजार स्ट्रीट पर डीजल वाले स्टोव बेचने वाले दुकानदार संजय चौधरी ने बताया कि डीजल वाले स्टोव की मांग तो बहुत ज्यादा है, लेकिन इसकी सप्लाई लगभग न के बराबर है।

सीएम यादव और डिप्टी सीएम देवड़ा पहुंचे बैतूल

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की पुत्री के निधन पर जताई शोक संवेदना

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और मंत्री कृष्णा गौर शनिवार को बैतूल पहुंचे। उन्होंने गंज स्थित निवास पहुंचकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की पुत्री सुरभि के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को हेलीकॉप्टर से बैतूल पहुंचे। उन्होंने गंज स्थित खंडेलवाल निवास जाकर परिवार के सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि वे सुरभि के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने आए हैं। उन्होंने कहा कि खंडेलवाल जी ने सुरभि की बहुत सेवा की। वह बाल्यकाल से ही कष्ट में थी, लेकिन परिवार के किसी सदस्य के बिछड़ने का दुख तो होता ही है। उन्होंने कहा कि इस शोक की घड़ी में वे परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं और बाबा महाकाल से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को मोक्ष प्रदान करें।

बेटे के सामने थ्रेसर में फंस गया किसान

छलनी की तरह हो गया आधा शरीर, मशीन खोलकर निकाले शव के टुकड़े

आगर (नप्र)। आगर जिले के बड़ोद जनपद के पिपलिया चाचा गांव में शनिवार सुबह करीब 10.30 बजे गेहूं की फसल निकालते समय थ्रेसर मशीन की चपेट में आने से एक बुजुर्ग किसान की मौत हो गई। शव निकालने के पूरी थ्रेशर मशीन को खोला गया। शव को निकालने के लिए लोगों को काफी मशक्कत करनी पड़ी। पूरा शरीर छलनी की तरह हो गया था। शव के टुकड़े मशीन में कई जगह फंसे हुए थे।

मृतक की पहचान 60 वर्षीय मांगी लाल भुवान सिंह के रूप में हुई है। यह घटना उनके अपने खेत में हुई, जहां उनके बेटे दरबार सिंह सहित

करीब छह परिजन मौजूद थे। मांगी लाल अपने खेत में गेहूं की फसल निकालने का काम कर रहे थे। इसी दौरान अचानक उनका हाथ थ्रेसर मशीन में आ गया। उनकी चीख निकल गई। जब तक परिजन पहुंचते ऊपर का आधा धड़ मशीन के अंदर समा चुका था।

मशीन में फंस गया था आधा शरीर- घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचित किया। बीजानगरी पुलिस चौकी के जोरावर सिंह ने घटनास्थल पर पहुंचे। इसके बाद मशीन खोलकर शव को निकाला गया। आधा धड़ छन्नी की तरह हो गया था। सिर भी पूरी तरह से पिचक गया था। मशीन में कई जगह शव के टुकड़े फंसे हुए थे। इसके बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया गया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

आज नेपानगर आएंगे सीएम

1676 करोड़ की नावथा डैम परियोजना का करेंगे भूमिपूजन, प्रशासन ने हटवाया अतिक्रमण

बुरहानपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 15 मार्च को नेपानगर का दौरा करेंगे। वे यहां नेहरू स्टेडियम ग्राउंड में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री 1676 करोड़ रुपए की नावथा डैम परियोजना का भूमिपूजन, नगर पालिका के 2 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित नए कार्यालय भवन का लोकार्पण और सातपायरी में बनने वाले औद्योगिक क्लस्टर का भूमिपूजन सहित कई विकास कार्यों का लोकार्पण व भूमिपूजन करेंगे।

मुख्यमंत्री के दौरे को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। उनके आगमन से पहले, शनिवार को एसडीएम भागीरथ वाखला, नेपानगर थाना प्रभारी ज्ञानू जायसवाल और नगर पालिका सीएमओ मोहन सिंह अलावा ने अपनी टीम के साथ निरीक्षण किया। उन्होंने शिवाजी नगर से एकता नगर और नेहरू स्टेडियम ग्राउंड तक के रास्ते से अस्थायी अतिक्रमण हटवाया। नगर पालिका की टीम ने जेसीबी की मदद से झाड़ियों की भी सफाई की।

जंग के चलते प्रदेश में गैस संकट, 50 हजार होटलों पर ताले का खतरा, पुलिस के साये में बंट रहे सिलेंडर हैं

रायसेन में चक्काजाम, भोपाल के रेजिडेंट डॉक्टर बोले- भूखे पेट ड्यूटी करना होगी

सिलेंडर के लिए बच्चे-बुजुर्ग भी लाइन में, होटलों में संकट, इंडक्शन-डीजल भट्टी 30 प्रतिशत महंगे

भोपाल /रायसेन/छिंदवाड़ा (नप्र)। मध्य पूर्व में ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच बढ़ते युद्ध के तनाव के कारण मध्य प्रदेश में भी पिछले कुछ दिनों से एलपीजी सिलेंडर की बुकिंग और उपलब्धता को लेकर आम आदमी परेशान है।अफरा-तफरी का माहौल बन गया है। गैस एजेंसियों के बाहर सिलेंडर को लेकर लंबी-लंबी कतारें लग गई हैं। कई गैस एजेंसियों ने अपने दफ्तरों पर ताला लगा दिया है। कमर्शियल सिलेंडर न मिलने के

फोटो-प्रवीण वाजपेई

इंडक्शन-डीजल भट्टी के रेट डबल

कारण 50 हजार से ज्यादा होटल-रेस्टोरेंट और टिफिन सेंटर में खाने का संकट है। मध्य प्रदेश में पिछले 5 दिनों से गैस की किल्लत बनी हुई है। होटल और रेस्टोरेंट में कॉमर्शियल सिलेंडर नहीं मिल रहे हैं, वहीं अब इसका असर घरों के किचन तक पहुंच गया है। भोपाल, इंदौर और उज्जैन जैसे शहरों में सिलेंडर लेने के लिए बच्चे और बुजुर्ग सुबह से ही लाइन में लग रहे हैं। कई बार गैस की बुकिंग नहीं हो पा रही, तो कभी 6 से 8 घंटे इंतजार के बाद सिलेंडर मिल रहा है।

प्रदेश के करीब 50 हजार होटल और रेस्टोरेंट भी गैस संकट से जूझ रहे हैं। ऐसे में इंडक्शन और डीजल भट्टी सहारा बन रहे हैं, लेकिन इनका खर्च 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ गया है। भोपाल में कुछ रेहड़ियां अस्थायी रूप से बंद भी हो गई हैं।

मध्य प्रदेश में रसोई गैस का संकट बढ़ता जा रहा है। पांच दिनों से प्रदेश के करीब 50 हजार होटल और रेस्टॉरेंट्स को कॉमर्शियल सिलेंडर की सप्लाई नहीं मिल पाई है।

हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि राजधानी भोपाल से लेकर छिंदवाड़ा तक हाहाकार मचा है। कहीं पुलिस के साये में सिलेंडर बंट रहे हैं, तो कहीं मशहूर फूड आउटलेट्स पर चूल्हों और भट्ठियों का सहारा लिया जा रहा है।

गांधी मेडिकल कॉलेज की मेस में दो दिन का स्टॉक- राजधानी के गांधी मेडिकल कॉलेज में गैस किल्लत का सीधा असर स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ने की आशंका है। यहां के 16 हॉस्टल मेस और मरीजों के सेंट्रलाइज्ड किचन में स्टॉक महज दो दिन का बचा है। बुकिंग पर 25 दिन की वेटिंग मिल रही है। रेजिडेंट डॉक्टरों ने चेतावनी दी है कि यदि सप्लाई बहाल नहीं हुई, तो उन्हें खाली पेट ड्यूटी करनी पड़ेगी। दशहरा मैदान में भी सुबह 6 बजे से ही सैकड़ों लोग कतारों में लगे हैं।

छिंदवाड़ा और ग्वालियर- चूल्हा युग की वापसी- छिंदवाड़ा- यहां के प्रसिद्ध इंडियन कॉफी हाउस में कमर्शियल गैस न मिलने के कारण अब पारंपरिक चूल्हों पर नाश्ता तैयार हो रहा है। भीड़ को देखते हुए यहां पुलिस की मौजूदगी में सिलेंडर बांटे जा रहे हैं।

ग्वालियर- शादियों के सीजन में कैटरर्स ने हार मान ली है। यहां अब डीजल भट्ठियों, लकड़ी और कोयले के दम पर खाना पक रहा है। बाजार में इंडक्शन और कोयले की मांग 20 प्रतिशत तक बढ़ गई है। कैटरर्स अब 15 मार्च से शुरू होने वाले खरमास का इंतजार कर रहे हैं, ताकि काम रुकने पर कुछ राहत मिले।

प्रशासन का दावा है कि स्टॉक पर्याप्त- गैस की किल्लत ने वैकल्पिक संसाधनों के बाजार में तेजी ला दी है। कॉमर्शियल सिलेंडर की कमी और सर्वर ठप होने के कारण बुकिंग न होने से लोग अब सीधे गोदामों पर धावा बोल रहे हैं।प्रशासन का दावा है कि स्टॉक पर्याप्त है और ट्रकों के देरी से पहुंचने के कारण समस्या हो रही है, लेकिन धरातल पर कतारें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं।

ग्वालियर में कैटरर्स ने जलाए चूल्हे, बाजार में डीजल भट्ठी और कोयले की मांग बढ़ी- ग्वालियर में एलपीजी सिलेंडर की किल्लत ने कैटरिंग कारोबार को संकट में डाल दिया है। कमर्शियल गैस न मिलने से अब शादियों और आयोजनों में मजबूरीवश डीजल भट्ठियों और लकड़ी-कोयले के चूल्हों पर खाना तैयार किया जा रहा है। कैटरर्स का कहना है कि 15 मार्च से खरमास शुरू होने के कारण शादी-ब्याह थम जाएंगे, जिससे उन्हें राहत की उम्मीद है। इधर, गैस की भारी कमी के चलते बाजार में डीजल भट्ठी, कोयला और इंडक्शन की मांग में 15 से 20 प्रतिशत का उछाल आया है। लोग वैकल्पिक इंतजामों के लिए दुकानों पर भीड़ लगा रहे हैं। रसोई गैस का यह अभाव शहर की पूरी खान-पान व्यवस्था को प्रभावित कर रहा है।

2 एजेंसियों से 2232 सिलेंडर जब्त, स्टॉक में अनियमितता

गैस सिलेंडर की किल्लत के बीच भोपाल में शुक्रवार को प्रशासन ने दो जगह कार्रवाई कर बड़ी मात्रा में सिलेंडर जब्त किए। जंबूरी मैदान स्थित विनीत गैस एजेंसी के गोदाम में निरीक्षण के दौरान 1574 सिलेंडर मिले, जिनका स्टॉक रजिस्टर से मिलान नहीं हो पाया। वहीं, गुफा मंदिर-लालघाटी स्थित ममता गैस एजेंसी पर छापे में तीन ट्रक और एक लोडिंग ऑटो से 658 सिलेंडर जब्त किए गए। एजेंसी यहां से विस्थापित होने के बावजूद अवैध भंडारण और वितरण कर रही थी। प्रशासन ने दोनों मामलों में जांच कर खाद्य विभाग को नियमानुसार कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

रायसेन में महिलाएं सड़क पर उतरीं प्रशासन ने संभाली स्थिति

रायसेन के सागर रोड पर शुक्रवार को जनता का गुस्सा फूट पड़ा। सुबह 5 बजे से लाइन में लगे लोगों को जब 10 बजे तक गैस नहीं मिली तो उन्होंने चक्काजाम कर दिया।प्रदर्शनकारी महिलाओं का दर्द छलका, उन्होंने कहा- न सुबह की चाय बनी, न बच्चों के लिए खाना। घर के काम छोड़कर 5 घंटे से सड़क पर खड़े हैं। प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर किसी तरह स्थिति को संभाला।

ग्वालियर-मशहूर नाश्ता स्टोर बंद

ग्वालियर का प्रसिद्ध जैन नाश्ता स्टोर गैस की किल्लत के कारण तीन दिनों से प्रभावित है। सिलेंडर नहीं मिलने के चलते आज संचालक ने दुकान पर ताला लगा दिया। बिना बोर्ड के मशहूर होने वाले इस चर्चित स्टोर का बंद होना शहर में गहराते एलपीजी संकट की गवाही दे रहा है।

दमोह - रेलवे स्टेशन के बाहर भोजनालय बंद

दमोह रेलवे स्टेशन परिसर के बाहर यात्रियों और स्थानीय लोगों की पसंद माना जाने वाला एक भोजनालय गैस सिलेंडर नहीं मिलने के कारण बंद हो गया है। संचालक विवेक गौतम ने बताया कि कई दिनों से कॉमर्शियल सिलेंडर की सप्लाई ठप है। स्टॉक खत्म हो चुका है, जिसके चलते मजबूरन भोजनालय बंद करना पड़ा। विवेक के मुताबिक, दो दिनों से ग्राहक खाना खाने पहुंच रहे हैं, लेकिन गैस नहीं होने से हमें भारी मन से उन्हें वापस लौटाना पड़ रहा है।

जबलपुर- दमोह नाका में गैस के लिए उमड़ी भीड़

जबलपुर के दमोह नाका स्थित गैस एजेंसी पर आज कल से भी ज्यादा भीड़ उमड़ पड़ी है। होम डिलीवरी ठप होने से मजबूरन महिलाएं और पुरुष एक ही लंबी कतार में घंटों खड़े हैं।

रायसेन -एसडीएम ने बंद गैस एजेंसी खुलवाई

रायसेन में चक्का जाम के बाद मौके पर पहुंचे एसडीम मनीष शर्मा ने गैस एजेंसी संचालक को फटकार लगाते हुए बंद एजेंसी को खुलवाया। कर्मचारियों को जमकर फटकार लगाई। एसडीएम ने कहा- मैं 2 घंटे से एजेंसी के बाहर खड़ा हूं। उन्होंने फोन पर भी एजेंसी संचालक को फटकार लगाते हुए कहा कि अगर लोगों को गैस उपलब्ध नहीं कराई तो मैं तुम पर कार्रवाई कर एजेंसी बंद कर दूंगा। इसके बाद मौके पर ही कर्मचारियों को बुलाकर एजेंसी के ताले खुलवाए गए।

भोपाल- एक ट्रक पहुंचा सिलेंडर, पहले पाने की होड़ में नोक-झोंक

भोपाल के टीटी नगर दशहरा मैदान में दोपहर 12 बजे एक ट्रक सिलेंडर आया। इस दौरान पहले पाने की मशक्कत शुरू हो गई। इससे उपभोक्ता और एजेंसी वालों में नोक-झोंक भी हुई।

राजधानी में सिलेंडर के लिए मारामारी थम नहीं रही है। दशहरा मैदान में सुबह 6 बजे से ही उपभोक्ताओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। सुबह 11.30 बजे तक 200 से अधिक लोग खाली सिलेंडर लेकर अपनी बारी का इंतजार करते दिखे। कड़ाके की धूप और घंटों के इंतजार के बाद भी कई लोगों को खाली हाथ लौटना पड़ रहा है।

गैस संकट पर मंत्री बोले-बड़े आयोजन कैंसल करें सिलेंडर स्टॉक न करें, 2 दिन में फिर आसानी से बुक होंगे सिलेंडर

प्रदेश के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री गोविंद सिंह राजपूत से बात की। गोविंद सिंह का मंत्रालय ही प्रदेश में गैस सिलेंडर की आपूर्ति के लिए जिम्मेदार है। मध्य प्रदेश में डीजल, पेट्रोल और एलपीजी गैस की कोई कमी नहीं है। हमारे पास पर्याप्त मात्रा में भंडार उपलब्ध है। जो लोग अफरा-तफरी का माहौल बना रहे हैं, मैं उनसे अपील करता हूं कि ऐसा न करें।पूरे विश्व को इस युद्ध की स्थिति का अंदाजा था। जहां तक घरेलू गैस की बात है, हमारे देश में करीब 50 प्रतिशत गैस उत्पादित होती है। शेष आपूर्ति के लिए केंद्र सरकार ने खाड़ी देशों (कुवैत, ओमान आदि) से सप्लाय के अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाएं की हैं। हम 20 प्रतिशत अतिरिक्त गैस मंगाने वाले हैं। इसलिए मध्य प्रदेश और पूरे देश में चिंता की कोई बात नहीं है।

भोपाल नगर निगम के अपर आयुक्त पर एफआईआर

करोड़ों के फर्जी बिल घोटाले में लोकायुक्त ने मारे छापे, 10 साल का सर्वर डेटा जब्त किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम में बिना काम कराए फर्जी बिलों के जरिए करोड़ों रुपए निकालने के मामले में लोकायुक्त पुलिस ने शुक्रवार को बड़ी कार्रवाई की। टीम ने निगम के डाटा सेंटर समेत कई शाखाओं में छापेमारी कर पिछले करीब 10 साल के दस्तावेज और सर्वर डाटा जब्त कर लिया।

निगम में फर्जी भुगतान की शिकायत नवंबर 2025 में लोकायुक्त को मिली थी। प्रारंभिक जांच में तथ्य सही पाए जाने पर 9 मार्च को आयुक्त गुणवंत सेवतकर के खिलाफ भ्रष्टाचार, आपराधिक षड्यंत्र और धोखाधड़ी की धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई है। इसके बाद कोर्ट से सर्च वारंट लेकर छापेमारी की गई।

सॉफ्टवेयर से फर्जी बिल तैयार कराए- लोकायुक्त एसपी दुर्गेश राठौर के अनुसार, शिकायत में आरोप है कि सॉफ्टवेयर की मदद से फर्जी बिल तैयार कराए गए और बिना काम कराए ही परिचितों व रिश्तेदारों की फर्मों के नाम पर करोड़ों रुपए का भुगतान कराया गया।

गुणवंत सेवतकर, अपर आयुक्त

गड़बड़ी- बिना काम कराए ई-बिल से भुगतान- आरोप है कि नगर निगम के जलकार्य, सामान्य प्रशासन और केंद्रीय वर्कशॉप जैसे विभागों के नाम पर वाहनों की मरम्मत, पेंटिंग और अन्य काम दिखाए गए। कई मामलों में वास्तव में काम हुआ ही नहीं, लेकिन सिस्टम में ई-बिल तैयार कर दिए गए। कुछ मामलों में जिस विभाग के नाम से बिल बनाए गए, उन्हें ही इसकी जानकारी नहीं थी।

तीन ठिकानों पर एक साथ छापेमारी- लोकायुक्त टीम ने सुबह करीब 10:30 बजे निगम के लेखा शाखा, कंप्यूटर शाखा, डाटा सेंटर, लिंक रोड-2 स्थित मुख्य कार्यालय और फतेहगढ़ स्थित पुराने कार्यालय में एक साथ छापेमारी की। लोकायुक्त का कहना है कि डिजिटल डाटा और दस्तावेजों की जांच के बाद मामले में अन्य कर्मचारियों और फर्मों की भूमिका भी सामने आ सकती है।

एसएपी सॉफ्टवेयर का डाटा जब्त किया- प्रारंभिक जांच में मोटर वर्क शाखा, जल कार्य विभाग और सामान्य प्रशासन विभाग से जुड़े कुछ कार्यों में गंभीर अनियमितताओं के संकेत मिले हैं। जांच टीम ने भुगतान से जुड़े एएसपी सॉफ्टवेयर का डिजिटल डाटा भी कब्जे में लिया है। अब इसकी जांच कर यह पता लगाया जाएगा कि किन-किन कार्यों के नाम पर भुगतान किया गया और वास्तव में काम हुआ भी था या नहीं।

अपर आयुक्त बोले- कमिश्नर से चर्चा के बाद भुगतान - अपर आयुक्त गुणवंत सेवतकर का कहना है कि लेखा शाखा में बिल सीधे तैयार या पास नहीं किए जाते।

एलपीजी किल्लत की आशंका के बीच आईआरसीटीसी अलर्ट

ट्रेनों में इंडक्शन व रेडी टू ईट फूड की वैकल्पिक तैयारी डब्ल्यूसीआर में 25 क्लस्टर किचन संचालित

भोपाल (नप्र)। शहर में चल रही एलपीजी की किल्लत के बीच ट्रेनों में भोजन व्यवस्था को लेकर उठ रहे सवालों पर आईआरसीटीसी ने स्थिति स्पष्ट की है। आईआरसीटीसी के प्रवक्ता एके सिंह के मुताबिक पश्चिम मध्य रेलवे क्षेत्र में फिलहाल कैटरिंग व्यवस्था पूरी तरह सामान्य है और ट्रेनों में भोजन की सप्लाई लगातार जारी है।

उन्होंने बताया कि यात्रियों को खाने को लेकर किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो रही है।

25 क्लस्टर किचन से हो रही सप्लाई- एके सिंह ने बताया कि डब्ल्यूसीआर क्षेत्र में आईआरसीटीसी के करीब 25 क्लस्टर किचन संचालित हो रहे हैं। इन किचनों के माध्यम से क्षेत्र की सभी प्रमुख ट्रेनों में नियमित रूप से भोजन लोड किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अभी तक किसी भी ट्रेन में भोजन आपूर्ति बाधित होने की स्थिति सामने नहीं आई है और किचनों में एलपीजी सिलेंडरों का पर्याप्त स्टॉक मौजूद है।

यात्रियों को सामान्य रूप से मिल रहा भोजन- सिंह के अनुसार हाल ही में कुछ यात्रियों ने भोजन ठंडा मिलने की शिकायत की थी, लेकिन ट्रेन में माइक्रोवेव ओवन की सुविधा उपलब्ध है। जरूरत पड़ने पर भोजन को दोबारा गर्म कर यात्रियों को दिया जा सकता है। उनका कहना है कि कैटरिंग व्यवस्था को लेकर लगातार निगरानी रखी जा रही है ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

एलपीजी संकट को देखते हुए वैकल्पिक योजना तैयार आईआरसीटीसी के प्रवक्ता ने बताया कि मुंबई स्थित जोनल कार्यालय की ओर से एहतियात के तौर पर वैकल्पिक व्यवस्था रखने के निर्देश दिए गए हैं। क्लस्टर किचनों और ट्रेनों में इंडक्शन कुकर, माइक्रोवेव ओवन और रेडी टू ईट फूड की व्यवस्था तैयार रखने को कहा गया है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि अभी तक इन वैकल्पिक व्यवस्थाओं का उपयोग करने की जरूरत नहीं पड़ी है।

फिलहाल स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में- प्रवक्ता के मुताबिक वर्तमान में गैस सप्लाई का सिस्टम सामान्य रूप से चल रहा है और ट्रेनों की कैटरिंग व्यवस्था प्रभावित नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि अगर भविष्य में किसी प्रकार की दिक्कत आती है तो यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तुरंत वैकल्पिक व्यवस्था लागू की जाएगी। फिलहाल डब्ल्यूसीआर क्षेत्र में स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है और ट्रेनों में भोजन की सप्लाई सुचारू रूप से जारी है।

बढ़ती गर्मी के बीच स्कूल सत्र टालने की मांग

कांग्रेस का दावा- फीस के लालच में बच्चों को बुला रहे निजी स्कूल, लू और गर्म हवाओं से बच्चों को खतरा

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में बढ़ती गर्मी को देखते हुए अप्रैल से शुरू होने वाले नए स्कूल सत्र को स्थगित करने की मांग उठने लगी है। मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता विवेक त्रिपाठी ने सरकार से अपील की है कि भीषण गर्मी के दौरान छोटे बच्चों को स्कूल बुलाना उनके स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है।

उन्होंने इस संबंध में स्कूल शिक्षा मंत्री, मुख्य सचिव और स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव को पत्र भेजकर स्थिति पर तत्काल फैसला लेने की मांग की है। उनका कहना है कि कई निजी स्कूल फीस के लालच में जल्द सत्र शुरू कर बच्चों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

मार्च से ही बढ़ने लगा तापमान- विवेक त्रिपाठी ने अपने

पत्र में कहा है कि प्रदेश में मार्च की शुरुआत से ही तापमान तेजी से बढ़ने लगा है। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले महीनों में अप्रैल और मई के दौरान लू और भीषण गर्म हवाओं का असर और अधिक बढ़ सकता है।

ऐसी स्थिति में छोटे बच्चों को स्कूल भेजना उनके स्वास्थ्य के लिए जोखिम भरा हो सकता है। खासकर प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए तेज गर्मी में स्कूल आना-जाना कठिन हो जाता है।

निजी स्कूलों पर लगाया फीस के लालच का आरोप- त्रिपाठी ने कहा कि प्रदेश में कई निजी स्कूल हर साल जल्दी नया शैक्षणिक सत्र शुरू कर देते हैं। कुछ स्कूल मार्च, अप्रैल और जून में ही छोटी कक्षाओं के बच्चों को स्कूल बुलाने लगते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसा मुख्य रूप से फीस वसूली के कारण किया जाता है।

इससे मासूम बच्चों और उनके अभिभावकों को परेशानी का सामना करना पड़ता है और बच्चों के स्वास्थ्य के साथ भी गंभीर खिलवाड़ होता है।

कई स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं की कमी- त्रिपाठी ने कहा कि प्रदेश के कई शासकीय और निजी विद्यालयों में गर्मी से बचाव के लिए जरूरी सुविधाएं भी पर्याप्त नहीं हैं। कई स्कूलों में शीतल पेयजल, पर्याप्त पंखे, कूलर और सही वेंटिलेशन की व्यवस्था नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में स्थिति और अधिक चिंताजनक बताई जा रही है। ऐसे में भीषण गर्मी के दौरान बच्चों को स्कूल बुलाना खतरे से खाली नहीं है।

लू और डिहाइड्रेशन का खतरा

उन्होंने कहा कि तेज गर्मी के कारण बच्चों में डिहाइड्रेशन, लू लगना, चक्कर आना और बेहोशी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इससे विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में सरकार को बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए समय पर निर्णय लेना चाहिए।

त्रिपाठी ने कहा कि बच्चों का स्वास्थ्य और सुरक्षा किसी भी प्रशासनिक प्रक्रिया से ज्यादा महत्वपूर्ण है। सरकार को संवेदनशीलता दिखाते हुए जल्द फैसला लेना चाहिए ताकि भीषण गर्मी में बच्चों को किसी तरह की परेशानी या खतरे का सामना न करना पड़े।

सरकार से की पांच प्रमुख मांगें

- अप्रैल में शुरू होने वाले शैक्षणिक सत्र को गर्मी कम होने तक स्थगित किया जाए।
- यदि सत्र शुरू करना जरूरी हो तो स्कूलों का समय सुबह जल्दी रखा जाए।
- सभी स्कूलों में शीतल पेयजल, प्राथमिक उपचार और गर्मी से बचाव से जुड़े दिशा-निर्देश लागू किए जाएं।
- जिला प्रशासन को इस मामले में विशेष निगरानी करनी चाहिए।
- निजी स्कूलों द्वारा मनमानी करने पर कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।

महिला दिवस विशेष

डॉ. लोकेन्द्र सिंह
समीक्षक

जीवन की खूबसूरती को दिखाती है 'जादूगरनी'

युवा कवि सुदर्शन व्यास का काव्य-संग्रह 'जादूगरनी' समकालीन हिंदी कविता की संवेदनशील और आत्मानुभूति से भरी अभिव्यक्ति है। इस संग्रह में संकलित 71 कविताएँ जीवन, प्रेम, प्रतीक्षा, रिश्तों की जटिलता, सामाजिक विडंबना और मानवीय मूल्यों के क्षरण जैसे विविध विषयों को स्पर्श करती हैं। 'सुनो न पापा', 'बेचारे लड़के', 'जीवन', 'मृत्यु और मोक्ष', 'देने का सुख', 'प्रेम और प्रतीक्षा', 'मौन प्रेम', 'रिश्ते की संजीदगी' जैसे शीर्षक ही इस बात का संकेत देते हैं कि कवि की दृष्टि आत्मीय रिश्तों से लेकर सामाजिक उत्तरदायित्व तक फैली हुई है।

कुछ जब कोई कविता किसी मरते हुए को जीन का सहारा दे जाए तो वह जादूगरनी होती है। युवा कवि सुदर्शन व्यास ने अपने नये काव्य संग्रह का नामकरण इसी भाव के साथ किया है- जादूगरनी। सच है, कविताओं में वह जादू होता है कि वे बड़े परिवर्तन की संवाहक बनती हैं। दुनिया के कितने ही बड़े आंदोलनों का आधार कविता ही बनी है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारियों और स्वतंत्रतता सेनानियों का बीज मंत्र 'वंदेमातरम' भी काव्य है। ऐसा काव्य जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में नये सिरे से प्राण फूंक दिए। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन काव्य के रूप में ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बहता आया है। कविता के महत्व एवं हमारे जीवन में उसकी उपस्थिति पर कवि ने उचित ही लिखा है कि मनुष्यता के सबसे बड़े शोक में भी कविता गायी जाती है और सबसे बड़ी खुशी में भी कविता होती है। कविता हमारे जीवन का आधार है और जब कोई कविता किसी मरते हुए को जीने का सहारा दे जाए तो वह जादूगरनी होती है।

युवा कवि सुदर्शन व्यास का काव्यङ्गसंग्रह 'जादूगरनी' समकालीन हिंदी कविता की संवेदनशील और आत्मानुभूति से भरी अभिव्यक्ति है। इस संग्रह में संकलित 71 कविताएँ जीवन, प्रेम, प्रतीक्षा, रिश्तों की जटिलता, सामाजिक विडंबना और मानवीय मूल्यों के क्षरण जैसे विविध विषयों को स्पर्श करती हैं। 'सुनो न पापा', 'बेचारे लड़के', 'जीवन', 'मृत्यु और मोक्ष', 'देने का सुख', 'प्रेम और प्रतीक्षा', 'मौन प्रेम', 'रिश्ते की संजीदगी' जैसे शीर्षक ही इस बात का संकेत देते हैं कि कवि की दृष्टि आत्मीय रिश्तों से लेकर सामाजिक उत्तरदायित्व तक फैली हुई है।

सुदर्शन की कविताएं, उनके निर्मल व्यक्तित्व की परिचायक भी हैं। 'सुनो न पापा' और 'सुनो श्रीपद', ये दो कविताएं- पिता और पुत्र का आत्मिक संवाद है। जीवन में संतान के आने के बाद सामान्यतौर पर एक व्यक्ति स्वयं को पीछे कर लेता है और अपनी संतती की खुशियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। अपने बच्चों के चेहरे पर हँसी देखने के लिए अपनी खुशियों को भूल जाता है। 'सुनो न पापा' का भाव कुछ इस प्रकार है कि यदि एक नवजात शिश बोल पाता तो अपने पिता के माथे की लकीरों को पढ़कर कहता कि आप मुझे देखकर कोई चिंता न किया करो। वहीं, 'सुनो श्रीपद' में पिता होने की अभिव्यक्ति है। सुदर्शन की कविताओं में भावों की अभिव्यक्ति हृदय की गहरायी से होती हुई दिखायी देती है। ये भाव ही उनकी कविताओं के प्राण तत्व हैं। यह भाव ही पाठकों को कविताओं से जोड़ने में सफल होते हैं। भाव पाठक के हृदय में सीधे उतरते हैं, इसलिए पाठकों को ये कविताएं अपने ही जीवन की कहानियाँ लगती हैं।

कविता 'धरोहर' में कवि ने बुजुर्गों को जीवित विरासत के रूप में चित्रित किया है। कवि लिखते हैं- धरोहर सरीखे हमारे बुजुर्ग, हर घर में आज भी खड़े हैं अविरल से... यहाँ कवि ने आधुनिक पीढ़ी की आत्ममुग्धता पर कविता के जरिए व्यंग्य किया है। हम ऐतिहासिक इमारतों को निहारने का समय तो निकाल लेते हैं, पर अपने घर की जीवित धरोहर 'बुजुर्गों' के साथ संवाद नहीं करते हैं। यह कविता पारिवारिक मूल्यों के क्षरण पर मार्मिक टिप्पणी है। कविता पढ़कर आपको लगेगा कि अब से हमें अपने बुजुर्गों के साथ कुछ समय बिताना चाहिए। याद रखें, जब हम बुजुर्गों के साथ होते हैं, तब उन्हें ही अच्छा नहीं लगता है अपितु हम भी समृद्ध होते हैं।

कवि का एक मुखर स्वर सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध भी दिखाई देता है। जिस तरह से हमारा समाज संवेदनहीन होते जा रहा है, उस पर अपनी पीड़ा और आक्रोश व्यक्त करते हुए कवि लिखता है- जिंदा लाशों के इस प्रगतिशील और सभ्य समाज से क्या अपेक्षा की जा सकती है? क्योंकि मरी हुई संवेदनाओं, मरे हुए गुस्से, मरे हुए तंत्र और, मरी हुई इंसानियत से, क्या अपेक्षा की जा सकती है? यह पंक्तियाँ समाज में मरती संवेदनाओं, निष्प्राण व्यवस्था और खोती इंसानियत पर तीखा प्रहार करती हैं। कवि का यह आक्रोश निराशा नहीं, बल्कि जागृति का संकेत है। वह पाठक को झकझोरना चाहता है, ताकि समाज आत्ममंथन कर सके।

कविता 'अंतिम' में कवि जीवन के शाश्वत प्रवाह की बात करते हैं। यह वह एक दार्शनिक की भाँति कहते हैं कि अंतिम, कभी अंतिम नहीं हुआ। न इच्छाएँ अंतिम होती हैं, न स्मृतियाँ। मृत्यु के बाद भी व्यक्ति स्मरण में जीवित रहता है। यह दृष्टिकोण जीवन को आशावादी और गतिशील बनाता है।

युवा कवि सुदर्शन व्यास की कविताओं में एक मजबूत स्वर प्रेम का भी रहता है। सात्विक प्रेम। जिम्मेदार प्रेम। जो परस्पर सम्मान सिखाता है। जो मनुष्य बनाता है। जीवन में प्रेम का होना मनुष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह प्रेम किसी भी रूप में हो सकता है। कवि सुदर्शन ने अपनी कविताओं में प्रेम के सूक्ष्मतम भावों को अत्यंत सरल शब्दों में व्यक्त किया है। कवि कहता है कि प्रेम का सबसे सुंदर रूप है प्रतीक्षा, जिसकी जितनी गहरी प्रतीक्षा, उसका उतना ही गहरा प्रेम। कवि के अनुसार जहाँ समर्पण है, वहाँ अपेक्षाएँ नहीं; पर प्रेम के साथ प्रतीक्षा अनिवार्य है। प्रतीक्षा यहाँ अधीरता नहीं, बल्कि विश्वास और समर्पण का प्रतीक बनकर उभरती है।

'उम्मीद' कविता में कवि सुदर्शन अपने लेखन धर्म को स्पष्ट करते हैं- जब भी कभी उदास होता हूँ, पर अक्सर खुशी लिखता हूँ। जब भी कभी हताश होता हूँ, पर अक्सर हौसला लिखता हूँ। जब भी कभी खफा होता हूँ, पर जिंदगी को खूबसूरत लिखता हूँ। क्या पता लिखे को पढ़कर, कोई रोता हँस पड़े, कोई रुका चल पड़े, कोई रूठा गले लगा ले जिंदगी अपनी। यह पंक्तियाँ कवि के सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। वे निजी पीड़ा को भी इस तरह रूपांतरित करते हैं कि पाठक को आशा और साहस मिल सके। कविता उनके लिए केवल आत्माभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज को संबल देने का माध्यम है। उनकी इस भावना को अन्य कविताओं में भी अनुभव किया जा सकता है।

युवा कवि सुदर्शन व्यास के काव्य संग्रह 'जादूगरनी' की भाषा सहज, सरस और भावप्रधान है। कवि ने कठिन प्रतीकों या जटिल बिंबों के बजाय सीधे संवाद की शैली अपनाई है। उनकी कविताएँ पाठक से सीधा संवाद करती प्रतीत होती हैं। भावों की प्रामाणिकता और सरल अभिव्यक्ति इस संग्रह की विशेषता है। कुल मिलाकर कहना होगा कि 'जादूगरनी' एक ऐसी काव्य यात्रा है, जिसमें प्रेम की कोमलता, समाज की कठोर सच्चाइयाँ, रिश्तों की संवेदनशीलता और जीवन का दार्शनिक बोध एक साथ उपस्थित हैं। युवा कवि सुदर्शन व्यास ने अपने अनुभवों और भावनाओं को सरल शब्दों में ढालकर पाठकों के हृदय तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है। यह संग्रह न केवल युवाओं के लिए, बल्कि हर उस पाठक के लिए महत्त्वपूर्ण है जो कविता में अपनी संवेदनाओं का प्रतिबिंब खोजता है।

पुस्तक - जादूगरनी
कवि - सुदर्शन व्यास
पृष्ठ - 122
मूल्य - 175
प्रकाशक - वेरा प्रकाशन, जयपुर

लघुकथा

फाइलें

सुरेश सौरभ

पेपर पढ़ रहा था वह, तभी एकदम चौंक पड़ा। चेहरा उसका उतर गया। पेपर परे सरका कर बुद्ध सा शान्त हो गया।

पापा लो-चाय तभी बेटी ने उसकी तंद्रा भंग की, क्या हुआ इतने उदास क्यों हैं पापा?

लग रहा सोशल मीडिया के साथ अब अखबार भी बंद करना पड़ेगा।

क्यों क्यों?

बेटी कुछ खबरें दिमाग को बिलकुल सुन्न कर देती हैं। अशांत कर देती हैं।

वह खबरें छोड़ दिया करो पापा

सिप सिप चाय पीते हुए,काश ऐसा हम कर

पाते, यह बावरा मन हर खबर को पढ़ने के लिए आतुर रहता है। अखबार के साथ एक पुराना जज़बाती रिश्ता सा जो है। वह देखो पापा अपनी फुलवारी में नये-नये कितने सुन्दर-सुन्दर फूल आ रहे हैं। देखो-देखो! नई-नई कितनी सुन्दर-सुन्दर कालियाँ भी आ रहीं हैं। वार्तालाप का सिरा बदल कर बेटी ने पापा का ध्यान सामने लॉन की फुलवारी की ओर आकृष्ट कराया।

एकबारगी लॉन की ओर नजर दौड़ते हुए पापा शिथिल शब्दों से बोले हाँ सुन्दर लग रहे हैं।

पापा अपराध और अपराधियों वाली खबरों की उम्र बहुत छोटी होती है-क्षणिक होती है, शीघ्र ही सब इन्हें भूल जाते है। इसलिए आप भी एपस्टीन फाइल को भूल जायें।

बेटी को हल्की चपत लगाकर पापा धीरे से मुस्कुराए-लग रहा दर्शनशास्त्र की पढ़ाई का असर तुझ पर होने लगा है।

ग़ज़ल

कैफ़ियत

वीरेंद्र नारायण झा 'वीरेन'

मत पूछो सरकार हमारी क्या करती है।
काम कम और आहें अब ज़ियादा भरती है।।

नेस्तनाबूद करनी है ग़रीबी उसे लेकिन,
ग़रीबों से ज़्यादा वो अमीरों पर मरती है।

दिखती है वो तरक़्क़ी पसंद इस क़दर कि,
दिन में दस-बीस बार लिबास बदलती है।

है दबदबा बहुत उसका सारे जहान में
मगर हमें ही वह कुछ नहीं समझती है।

अपनी कामयाबी के क़िस्से आप ही सुनाती है,
सत्ता खोने की आशंका से फिर क्यों डरती है।

चाहिए कैफ़ियत सबकी 'वीरेन' उसे सदा,
कैफ़ियत उसकी पूछो तो भड़क उठती है।

अनुभव

बृजेश प्रसाद

माँ और फसल

गाँव की मिट्टी में एक अलग ही सुगंध होती है - मेहनत की, उम्मीद की और जीवन की सादगी की। कुछ दिनों पहले जब मैं गाँव गया, तो स्वाभाविक ही मेरे कदम खेत-खलिहानों की ओर बढ़ गए। खेतों की पगडंडियों पर चलते हुए गाँव-ज्वार के लोगों से मुलाकात हुई। बातचीत के दौरान यह महसूस हुआ कि इस बार गाँव के लोगों के चेहरों पर पहले जैसी संतुष्टि नहीं है। उनके मन में अपनी फसल को लेकर एक हल्की-सी निराशा दिखाई दे रही थी।

दरअसल, इस वर्ष मॉनसून समय पर नहीं आया। धान की बुआई के समय बारिश की देर ने खेती की पूरी लय को बिगाड़ दिया। किसानों ने धान तो बो दिया, परंतु समय पर पानी न मिलने के कारण उसकी वृद्धि प्रभावित हुई। जब तक मॉनसून पूरी तरह सक्रिय हुआ, तब तक खेती की गति पहले ही धीमी पड़ चुकी थी। इसका प्रभाव आगे चलकर गेहूँ की बुआई पर भी पड़ा। धान की कटाई में देरी हुई और परिणामस्वरूप गेहूँ की बुआई भी देर से हो पाई। खेती की इस समय-श्रृंखला में आई छोटी-सी देरी ने फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों को प्रभावित किया। इस प्रकार, मौसम की अनिश्चितता ने किसानों की मेहनत पर एक तरह से प्रश्नचिह्न लगा दिया।

जब माँ खेतों से लौटती तो उसके चेहरे पर एक गहरी थकान के साथ हल्की-सी उदासी भी दिखाई दे रही थी। पूछा तो उसने कहा कि 'पैसा-कौड़ी की बात त नइखे, लेकिन ई बार के मेहनत जैसे बेकार चल गईल।' यह बात सुनकर मन भीतर तक छू गया। जितना मैं माँ को जनता हूँ, उसका हमेशा से विश्वास मेहनत पर रहा है, पैसे पर नहीं। उसके लिए खेत केवल आजीविका का साधन नहीं है, बल्कि जीवन का आधार भी हैं। परंतु बदलते मौसम और अनिश्चित मॉनसून ने ग्रामीण जीवन को, विशेषकर किसानों को गहराई से प्रभावित किया है।

माँ हर रोज़ खेतों की ओर जाती है और लौटते समय मेरे लिए कुछ-न-कुछ लेकर आती है - कभी ताज़ी मटर, कभी हरा साग, टमाटर तो कभी धनिए की सुगंधित पत्तियाँ। ऐसा लगता है जैसे इन कुछ दिनों में ही वह अपने खेतों की सारी उपज और अपने स्नेह को मुझे खिलाकर संतोष पा लेना चाहती है। माँ की आँखों में हमेशा अपने बच्चों के लिए एक अटूट विश्वास और उम्मीद रहती है।

इन दिनों मेरे जीवन में भी संघर्ष का दौर चल रहा है। रोज़गार की तलाश और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश जारी है। ऐसे समय में माँ की बातें ही मेरे लिए सबसे बड़ा संबल बनती है। वह समझाते हुए कहती है - बाबू, खाये-पिए में कभी कोताही मत करीह, अभी हम लोग जिंदा बानी। तु बस आपन प्रयास जारी रखह, कामयाबी देर-सबेर जरूर मिली। हमरे लगे खेत बा, फसल होत बा। तोहर पापा भी दू-चार पैसा कमा ही लेत बानीं। तु हमनी के चिंता मत करिह, बस आपन पढ़ाई और मेहनत पर ध्यान दिहल करिह...

माँ की यह सादगी भरी बातें मन में आश्वस्ति से भर देती हैं। जब वापस लौटने का समय आता है, तो माँ मेरे लिए एक छोटी-सी गठरी बाँधने लगती है। उस गठरी में नमक, तेल, मसाले, चावल और आटे के साथ मूँगफली, मटर और न जाने कितनी छोटी-छोटी चीजें बाँध देती है। देखने में वह गठरी भले ही छोटी हो पर उसके भीतर माँ का स्नेह, उसका विश्वास और उसके आशीर्वाद की अनंत ऊष्मा समाई रहती है।

वास्तव में उस छोटी-सी गठरी में केवल घर का सामान नहीं होता, बल्कि माँ की ममता, गाँव की मिट्टी की खुशबू और जीवन के संघर्षों से लड़ने का साहस भी बँधा होता है। माँ और फसल दोनों ही जीवन के आधार हैं। एक पेट भरती है, तो दूसरी मन को संबल देती है।

यात्रा शुरू होते ही हमारे प्रिय लोककवि राकेश कबीर की कविता 'माँ अब भी जोहती है' स्मृतियों में तैरने लगती है ङ्क

माँ अब भी जोहती है
ऐसा नहीं है कि माँ को कोई दुःख है
लेकिन जब घर जाकर वापस लौटता हूँ
माँ रोती है
माँ तब भी रोई थी
अपने नीम के पेड़ के नीचे खड़े होकर
अपने घुँघट में आँसुओ को छुपाकर
उस दूर कोने तक जहाँ से मुड़ने के बाद
माँ नहीं दिखती थी
हममें हिम्मत नहीं थी कि मुड़के देख सकें माँ को
माँ हर बार रोती थी
गठरियों में बाँधते हुए चावल आटा और दाल
शहर पहुँचते ही
दीवार में टंगे कैलेंडर की तारीखों में
खिंच जाता था एक गोला
अगली बार कब जाना है
माँ से मिलने
यह जानते हुए भी कि माँ फिर रोएगी
माँ एक-एक कर हमको भेजती रही शहर
और रोती रहती है हर बार
हमको विदा करके।

ग़ज़ल

लिखे जा रहे हैं हम

कमलेश कुमार दीवान

यूं जिंदगी के हाल
लिखे जा रहे हैं हम
क्या क्या रहे सबाल
लिखे जा रहे हैं हम।

कुछ सबक ऐसे मिले
जीने के यहां फिर
जीवन के वे मलाल
लिखे जा रहे हैं हम।

लिखते रहे हैं बहुत सी
बातों को रोज़ ही
फिर भी तो हैं बेहाल
लिखे जा रहें हैं हम।

वक्त अब फिर लौटकर
न आयेगा 'दीवान'
उसके ही सब कमाल
लिखे जा रहे हैं हम।

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मुझे ले जाने यमराज का आना

विधि का विधान है जिसने भी इस धरती पर जन्म लिया है उसे उम्र पूरी होने पर एक दिन इस प्यारी हरी भरी सुंदर धरा को छोड़कर मुक्तिधाम धाम का मेहमान बनते हुए हमेशा के लिए स्वर्ग दर्शन को जाना होता है ।

जीवन मृत्यु साथ का खेल भी निराला है। जैसे दोनों यह निश्चय करके आए हों, साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना? जन्म के साथ ही मृत्यु जीव के ऊपर सदा उठते बैठते दौड़ते भागते खाते पीते हंसते नाचते गाते , यानी यत्र तत्र सर्वत्र लदी फिरती रहती है । एक पल भी किसी को छूट नहीं देती । समय पूरा होते ही जीवन खत्म हुआ का अलार्म बजा देती है । ऐसी स्थिति में व्यक्ति कितना कुछ भी प्रयास करें ,पर यमदूत उसे ले जाने के लिए डोर बेल नहीं बजाते। वह तो सीधे थानेदार की तरह आ धमकते हैं। देखते ही देखते जीव की आत्मा को ले उड़ते हैं।

मुझे एक रात नींद में दरवाजा खटखटाने की आवाज आई । मैं बाहर निकल कर दरवाजा खोलने की सोच रहे था। तभी एक डरावनी शक्ल मेरे सामने आ खड़ी हुई। मैं अपनी प्रतिक्रिया भी प्रकट नहीं कर पाया। सामने यमराज भैंसे पर सवार हो मुझे ले जाने के लिए तैयार थे। मैंने उनसे कहा महाराज! आपने मुझे ले जाने के लिए क्यों कष्ट किया? अपने किसी भी दूत को भेज देते। मैं कोई आनाकानी थोड़े ही करता। सीधा-साधा जीवन जीकर कंठी माला फेरने वाला प्राणी हूं । पर आपका आना मेरी समझ से बाहर है । अब आप आही गये हो तो भारतीय मेहमान आगमन परंपरा के अनुसार आपका स्वागत करना होगा। इसके लिए मुझे बाजार जाकर माला और मिठाई लानी होगी । जरा आप यहीं ठहर जाएं। मुझे बाहर जाने की छूट दे दें।आप भरोसा रखें कि मैं किसी चंट चालाक कैदी की तरह भाग खड़ा नहीं होउंगा। बस यह गया और वह आया ।

यमराज मेरे स्वागत वाली बात पर मुस्कुराए। बोले सच में तुम बड़े व्यवहार कुशल व्यक्ति हो। मैं तुमसे प्रसन्न हूं। अभी तुमने एक प्रश्न किया था कि मैं ही तुम्हें लेने क्यों आया हूं ? तो इसके जवाब में तुम्हारी धार्मिक संस्कृतिक व पारिवारिक परंपरा है। तुम उन लोगों की तरह नहीं हो, जो अपने जीवन का समय पूरा होने के निकट भी उसे बचाने के लिए अस्पताल में भर्ती होकर ,मंहगा इलाज कराने लग जाते हैं। इंजेक्शन गोलियां ड्रिप के सहारे मौत को रोक कर उसका अपमान करना चाहते हैं । इतना ही नहीं कहीं तो वेंटिलेटर पर भी इस आशा से चले जाते हैं कि मौत को कुछ समय के लिए टालकर फिर जिंदगी जी लेंगे। पर जब कभी आई सी यू वार्ड में किसी की मौत आती तो उसे अंतिम समय में परिजन भी नहीं देख मिल पाते। पर तुमने अपनी स्वाभाविक मौत का घर पर ही रहकर सम्मान किया है। तुम्हारे जैसा सोच रखने वाले लोग गिनती की ही होते हैं। जो महंगा इलाज करा, मौत को कुछ दिन टालने की क्षमता रखते हुए भी, तुमने ऐसा ना कर मौत का स्वागत सम्मान किया है। परिजनों से तुम घिरे रहे और उन्होंने तुम्हारी जीवन यात्रा के अंतिम समय के दर्शन किए । इसलिए मैं ही तुम्हें मौत के समान के लिए लेने आया हूं। स्वर्ग में तुम्हें मनभावन कई नई वस्तुएं देखने को मिलेंगी। जीवन नई गति से आनंद मंगल की यात्रा करेगा। तुम्हें मेरे राज्य में कोई असुविधा नहीं रहेगी । इस पृथ्वी लोक की यातना से सदा के लिए मुक्ति मिल जाएगी। सच में ईश्वर का वरदान तुम्हारे साथ है। अच्छा अब चलने का समय हो रहा है । पर चलने से पहले तुम्हारी आखिरी इच्छा हो तो बताओ? उसे भी पूरी कर लो। महाराज !आप बड़े कृपालु दया निदान हैं जो आप मेरे जैसे सामाजिक धार्मिक गतिविधियों वाले व्यक्ति को लेने आए। अब आपने मेरी अंतिम इच्छा के लिए पूछ ही लिया तो मैरी अभी तो यही इच्छा है कि अभी मुझे इसी हरी भरी धरती का आनंद लेने दें । मैं यहीं रह कर स्वर्ग की कल्पना का सुख उठाता रहूंगा। यमराज ने अपनी त्योरियां चढ़ाते हुए बोले यह तुमने क्या मांग लिया ? तुम अभी भी इस धरती के कीचड़ में ही जाना चाहते हो? नहीं महाराज मैं कमल के फूल की तरह कीचड़ से ऊपर अपना जीवन जी लूंगा। जन्म भूमि तो महाराज स्वर्ग से भी महान होती है।

मैंने तुमसे तुम्हारी अंतिम इच्छा पूछी तो तुमने अपनी चतुराई से। मुझे धर्म संकट में डाल दिया । तुम भारतीय बड़े होशियार होते हो। कई वर्षों पहले ऐसे ही मुझे सती सावित्री ने भी धर्म संकट में डाल मुझे छल लिया था। और मुझे शर्मिंदा होते हुए खाली हाथ लौटना पड़ा था ।

यमराज ने कुछ सोचा फिर मुझे जीवन दान देते हुए मुस्कुरा कर चले गए। मैंने देखा उनका भैंसा तेजी से स्वर्ग की ओर दौड़े जा रहा था ।

मैं इस जीवन संघर्ष में सफल होता चिल्ला उठा मैं जिंदा हो गया ! मैं जिंदा हो गया! मेरी उत्साह भरी तेज आवाज सुनकर पास में सो रही पत्नी घबरा कर उठी और बोली यह क्या बोल रहे हो? अभी मरे ही कहां जो जिंदा हो गये। आजकल लगता है सपनों की दुनिया में खोने का चस्का लग गया । लो ठंडा पानी पी लो। पर मुझे अभी भी डर लग रहा है कहीं कोई बहाना लेकर यमराज फिर ना आ धमकें। पर मैं हनुमान चालीसा बोल कर हिम्मत जुटाई ।जल्द ही इस जीवन मृत्यु की मोह माया को भूलकर, चाय पीता अपने स्टडी रूम में जाकर मैग्जीन पढ़ने लगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

वेदवाणी, विद्वान, शिल्प और अध्ययनरत कलाकार

जीवन अनमोल है, जीवन की हर एक घटनाएं महत्वपूर्ण हैं। जीवन में अपने-अपने कृत्यों में लीन हर एक प्राणी महत्वपूर्ण है। जो जिस हेतु इस जगत में आया हुआ है, बिना आलस्य के, बिना विलंब किए उसे अपने उस कार्य को करना ही चाहिए। आलस्य के वशीभूत होकर खुद भी और दूसरों को भी सृष्टि के नियमों से विलग चलने के प्रयास से बचाव करना चाहिए। किसी भी संकट से खुद भी और दूसरों को भी बचाना चाहिए।

विश्वे देवासो अप्तुर- सुतमा गन्त तुणीय-।
उस्त्रा इव वसराणि?।। (ऋ01/03/08)

हे (अप्तुरः) मनुष्यों को सुंदर, सुगठित सभी कार्य को करने में योग्य शरीर और विद्या, ज्ञान, बल आदि देने वाले और (तूर्णयः) उस विद्या आदि के प्रकाशित, उपयोग में लाने हेतु योग्य बनाने वाले, समर्थ करने वाले, कार्यों को करवाने में शीघ्रता करने वाले, (विश्वेदेवासः) सभी विद्वान् लोग, जैसे (स्वसराणि) दिनों को प्रकाशित करने के लिये, प्रकाशवान बनाने के लिए, दूसरों को जीवन प्रदान करने वाले (उस्राइव) सूर्य और किरणें आती जाती हैं वैसे ही आप भी मनुष्यों के समीप (सुतम्), उनके कर्म-उपासना हेतु प्रोत्साहित करने, जगाने, बल प्रदान करने और ज्ञान को प्रकाशवान बनाने के लिए (आगन्त) नित्य आया जाया करें। (महर्षि दयानंद)। जिस प्रकार मेघ जल बरसा कर धरा पर अन्न की वृद्धि करते हैं, वायु अपने कार्य को करते हुए सभी को जीवन प्रदान करते हैं उसी प्रकार शिल्प विद्या में माहिर, कला के ज्ञाता को भी (शिल्प और कला को एक मैं इस लिए कह रहा हूँ क्योंकि वेदों में कला की शुरुआत शिल्प के ही रूप में हुई है) अपने कर्तव्यों का पालन बेहिचक और तीव्रता के साथ करना चाहिए। कलाकृतियों से धरा को, लोगों को, समृद्ध बनाना चाहिए। कलाकृतियों के साथ को व्याकुल दुनिया हमेशा से रही है, उसके गुण को महत्व देते आई है, उसी प्रकार कलाकार भी हमेशा से ही, सृजन के साथ से ही सृजनशील रहा है। अगले ही (ऋ 01/03/09) मंत्र में शब्द एहिमायास- का जिक्र है जिसके विस्तार में कहा गया है कि जिनकी बुद्धि सब तरफ यत्न शील है वे विद्वान अर्थात (Proficient in all arts & branches of knowledge) विद्या की सब कलाओं में और शाखा प्रशाखाओं में निष्णात हैं, उनकी बुद्धि सर्वव्यापी है। ऋभुगण हेतु आए मंत्र-

तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम। (ऋ 01/20/03)

में जहाँ इसी के एक मंत्र पहले ही शिल्पी को विद्वान भी कहा गया है, अर्थात ये सिद्ध होता है कि विद्वान यानी सर्वव्यापी ज्ञान का भंडार अर्थात शिल्पी पर भी ये बात लागू होती है तो आइए उपरोक्त मंत्र की ओर बढ़ते हुए बात करते हैं। इस मंत्र में

सदा सत्य व्यवहार से युक्त, कुशलतापूर्वक सभी के उपयोग हेतु सभी ओर जाने वाले उत्तम, साधन युक्त, सुखप्रद, अवकाश युक्त रमण साधन रथ आदि यान बनाने की बात है (जयदेव शर्मा), जहाँ शिल्पियों के रूप में कलाकार पहले से ही उपस्थित रहे हैं, जहाँ कलाकारों को श्रेष्ठ माना गया है, जैसी बातें आम हैं। भारतीय कला में भारतीय वेदों, ग्रंथों की महती भूमिका रही है। आज कलाकृतियाँ आधुनिकता का वस्त्र ओढ़े कितने भी दंभ के साथ आगे बढ़ने की बात करती हों परन्तु सच तो ये है कि सभी कलाकृतियाँ अपने समय की आधुनिक ही होती हैं। भारत की थाती हमेशा से कला को लेकर सम्पन्न रही है। वेदों में कलाकारों, शिल्पकारों पर भी बहुत कुछ लिखा, रचा गया है।

उत त्यं चमसं नवं त्वष्टुर्देवस्य निष्कृतम। अकर्त चतुर- पुनः ।। (ऋ 01/20/06)

मंत्र में विद्वान् लोग जो (त्वष्टुः) शिल्पी, कारीगर, कलाकार (देवस्य) विद्वान् के द्वारा (निष्कृतम्) सिद्ध किया हुआ काम, सृजित करी हुई कृति, सुख देनेवाला होता है, आनंद दायक है, (त्यम्) उस (नवम्) नवीन दृष्टिगोचर कर्म को देखकर, सृजित किए हुए कृतियों को देखकर (उत) निश्चय से (पुनः) उसके अनुसार फिर (चतुरः) भू, जल, अग्नि और वायु से सिद्ध होनेवाले शिल्पकामों को (अकर्त्त) अच्छी प्रकार सिद्ध करते हैं, तब आनन्दयुक्त होते हैं (महर्षि दयानंद), की बात है। समझदार मनुष्य, चेतन प्रधान लोग कुशल कारीगर, कलाकार, विशिष्ट जन के पास बैठकर, साथ रहकर, कृतियों के निर्माण प्रक्रिया को समझ कर, सृजनशीलता को देख परख कर, खुद को भी उस स्तर तक ले जा सकने में सफल हो सकते हैं। उनके शिल्प कार्यों को देखकर उनका अनुसरण कर और भी कृतियों का निर्माण कर सकते हैं और सृष्टि के क्रियान्वयन में संसाधनों की सुलभता को और समृद्ध बना सकते हैं की बात है, में कला, कलाकार और उसकी जरूरतों पर बल को दर्शाया गया है। कहना गलत न होगा कि हमारे वेदों में शुरू से ही शिल्पियों, शिल्पों पर गहनता

से अध्ययन और चर्चा होना शुरू हो चुका था फिर नाहक ही हम पाश्चात्य को श्रेष्ठता का जामा पहनाने पर लगे हुए हैं। अब समय आ गया है कि हम भारतीयों को इससे बाहर निकलना ही होगा, पहचानना होगा खुद को और खुद के अस्तित्व को जिसपर हमेशा से कुछ विशेष लोगों द्वारा कुठाराघात करने का प्रयास किया गया है। मंत्र

÷पावका न- सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसु-।। (ऋ01/03/10)

में सभी को पवित्र करने वाली, शुद्ध जलों से युक्त नदी के समान उत्तम ज्ञानमयी और गुरू परम्परा से बहने वाली वेदवाणी और उसको धारण करने वाले विद्वान जन परस्पर सम, उत्तम कर्म और ज्ञान से ऐश्वर्य को धारण करनेवाली होकर यज्ञ, शिल्प, व्यवहार, विद्याभ्यास, आत्मा और राष्ट्र को प्रकाशित करें।, जैसी बातों पर जोर है जबकि यहीं बारहवें मंत्र में है कि जिस प्रकार बहती जलधारा यह सूचना देती है कि उसके निकास में अनंत जलसागर है उसी प्रकार वेदवाणी भी उपदेश परम्परा से बराबर विस्तृत होकर अपने निकाश में स्थित अनंत ज्ञान और शब्दराशि का ज्ञान कराती है।

अधारयन्त वह्नयोऽभजन्त सुकृत्यया। भागं देवेषु यज्ञियम।। (ऋ 01/20/08)

यज्ञ के लिए उपयोगी चमस आदि का निर्माण करने के कारण ऋभुगण मरणधर्मा होने पर भी अमर बन गए हैं। वे अपने सत्कर्मों के कारण देवों के मध्य बैठकर यज्ञ का भाग प्राप्त करते हैं। (ऋ 01/20/08) इसी मंत्र पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं कि जो (वह्नयः) संसार में शुभकर्म वा उत्तम गुणों को प्राप्त करानेवाले बुद्धिमान् सज्जन पुरुष (सुकृत्यया) श्रेष्ठ कर्म से (देवेषु) विद्वानों में रहकर (यज्ञियम्) यज्ञ से सिद्ध कर्म को (अधारयन्त) धारण करते हैं, वे (भागम्) आनन्द को निरन्तर (अभजन्त) सेवन करते हैं जबकि रामगोविन्द त्रिवेदी (सायण भाष्य के आधार पर) लिखते हैं कि यज्ञ के वाहक ऋभुगण मनुष्य-जन्म ले चुकने पर भी अविनाशी आयु प्राप्त किये हुए हैं और अपने सत्कर्म-द्वारा देवों के बीच यज्ञ-भाग का सेवन करते हैं। जो (वह्नयः) संसार में शुभकर्म वा उत्तम गुणों को प्राप्त करानेवाले बुद्धिमान् सज्जन पुरुष (सुकृत्यया) श्रेष्ठकर्म से (देवेषु) विद्वानों में रहकर (यज्ञियम्) यज्ञ से सिद्ध कर्म को (अधारयन्त) धारण करते हैं, वे (भागम्) आनन्द को निरन्तर (अभजन्त) सेवन करते हैं॥ 8॥ मनुष्यों को योग्य है कि अच्छे कर्म वा विद्वानों की सङ्गति तथा पूर्वोक्त यज्ञ के अनुष्ठान से व्यवहारसुख से लेकर मोक्षपर्य्यन्त सुख की प्राप्ति करनी चाहिये॥8॥ उन्नीसवें सूक्त में कहे हुए पदार्थों से उपकार लेने को बुद्धिमान् ही समर्थ होते हैं।

कलाकारों एवं शिल्पियों को भी इन पंक्तियों से अलग नहीं किया जा सकता।

÷ये महो रजसो विदुर्विश्वे? देवासो? अद्रुहः। मरुद्भिरग्न आ गहि॥÷ (ऋ 01/19/03)

(ये) जो (अद्रुहः) किसी से द्रोह न रखनेवाले (विश्वे) सब (देवासः) विद्वान् लोग हैं, जो कि (मरुद्भिः) पवन और अग्नि के साथ संयोग में (महः) बड़े-बड़े (रजसः) लोकों को (विदुः) जानते हैं, वे ही सुखी होते हैं। हे (अग्ने) स्वयंप्रकाश होनेवाले परमेश्वर ! आप (मरुद्भिः) पवनों के साथ (आगहि) विदित होइए और जो आपका बनाया हुआ (अग्ने) सब लोकों का प्रकाश करनेवाला भौतिक अग्नि है, सो भी आपकी कृपा से (मरुद्भिः) पवनों के साथ कार्य्यसिद्धि के लिये (आगहि) प्राप्त होता है॥3॥ जो विद्वान् लोग अग्नि से आकर्षण वा प्रकाश करके तथा पवनों से चेष्टा करके धारण किये हुए लोक हैं, उनको जानकर उनसे कार्य्यों में उपयोग लेने को जानते हैं, वे ही अत्यन्त सुखी होते हैं॥3॥

ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास? आसते। मरुद्भिरग्न आ गहि॥(ऋ 01/19/06)

(ये) जो (देवासः) प्रकाशमान और अच्छे-अच्छे गुणोंवाले पृथिवी वा चन्द्र आदि लोक (नाकस्य) सुख की सिद्धि करनेवाले सूर्य्य लोक के (रोचने) रुचिकारक (दिवि) प्रकाश में (अध्यासते) उन के धारण और प्रकाश करनेवाले हैं, उन पवनों के साथ (अग्ने) यह अग्नि (आगहि) सुखों की प्राप्ति कराता है॥6॥ सब लोक परमेश्वर के प्रकाश से प्रकाशमान हैं, परन्तु उसके रचे हुए सूर्य्यलोक की दीप्ति अर्थात् प्रकाश से पृथिवी और चन्द्रलोक प्रकाशित होते हैं, उन अच्छे-अच्छे गुणवालों के साथ रहनेवाले अग्नि को सब कार्य्यों में संयुक्त करना चाहिये॥6॥ या जिस प्रकार प्रकाशमान सूर्य के आश्रय पर जो पृथ्वी, चन्द्र अन्यान्य लोक आदि या प्रकाश की किरणें हैं उनके साथ ही सूर्य उदय होता है उसी प्रकार सुख युक्त राष्ट्र के ऊपर अधिष्ठाता रूप से विद्यमान स्वयं ज्ञानवान, तेजस्वी, सर्वोपरी ज्ञानप्रद राजसभा में जो विद्वान पुरुष विराजते हैं उन राष्ट्र के प्राण स्वरूप विद्वान पुरुषों के साथ से अग्रणी तेजस्विन नायक तूं हमें प्राप्त हो। ऋग्वेद में ऐसे ही ऋभुओं और त्वष्टा के लिए और भी तमाम मंत्र रचे गए हैं जहां कला के होने को बल मिलता है। संलग्न कलाकृति ओमप्रकाश मिश्र जी की है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

रंगमंच से बड़े परदे तक आई उम्रदराज रिश्तों की सच्चाई

फिल्म जब खुली किताब ÷ सुप्रसिद्ध फिल्मकार और चरित्र अभिनेता सौरभ शुक्ला के इसी नाम वाले नाटक का फिल्मी रुपान्तरण है जिसे उन्होंने खुद लिखा और निर्देशित किया था। रंगमंच पर केन्द्रीय भूमिका उन्होंने खुद निभाई थी। उस नाटक में उनकी पत्नी की केन्द्रीय भूमिका में इरावती हर्षे महादेव थीं।जबकि इस फिल्म में केन्द्रीय भूमिका में पंकज कपूर और डिंपल कापड़िया हैं।यह एक ऐसी फिल्म है जो उम्रदराज रिश्तों की सच्चाइयों को बिना किसी दिखावे के दिखाती है। इसमें जरूरत से ज्यादा ड्रामा नहीं है और न ही किसी तरह की बनावटी मिठास। यह फिल्म हर किसी की पसनद नहीं बनेगी। लेकिन जिन्हें बातचीत पर चलने वाली, धीरे-धीरे खुलती कहानी और इन्सानी गलतियों पर आधारित फिल्में पसन्द हैं, उन्हें यह काफी ईमानदार लगेगी। एक्टर्स का बढ़िया काम और असली भावनाएं फिल्म को सहारा देती हैं। लेकिन इसकी धीमी रफ्तार और थोड़ा बिखरी हुई पटकथा इसे पूरी तरह असरदार नहीं बनने देती है ,यह इस फिल्म की सबसे बड़ी कमी है ?।

फिल्म की कहानी गोपाल (पंकज कपूर) और अनुसूया (डिंपल कापडिया) के आसपास ही घूमती है । अनुसूया दो साल कोमा में रहने के बाद अचानक होश में आती है। वह धीरे-धीरे जिन्दगी में लौटने लगती है। शुरू में सब कुछ सामान्य लगता है, लेकिन एक दिन वह गोपाल को पचास साल पुराने एक सच के बारे में बताती है। यह बात उनके लम्बे रिश्ते की नींव को हिला देती है। यह खुलासा गोपाल को भीतर तक तोड़ देता है। उसे लगता है कि उसने उम्रभर एक झूठ पर रिश्ता निभाया है और इतने साल से वह धोखे में ही जी रहा था। इसी गुस्से और टूटन में वह बूढी उम्र में तलाक लेने का फैसला करता है।इसके बाद घर में उथल-पुथल शुरू हो जाती है। बच्चे उलझ जाते हैं। तलाक की प्रक्रिया के दौरान गोपाल वकील आर. के. नेगी (अपारशक्ति खुराना) से मिलता है। उनके ऑफिस में बैठकर होने वाली बातचीत फिल्म के सबसे दिलचस्प हिस्सों में से एक है। यहां गोपाल के कई साल पुराने जख्म खुलते हैं और अनुसूया का सच भी धीरे-धीरे सामने आता है। तलाक से शुरू हुआ यह सफर आखिर में उन्हें एक नई समझ की ओर ले जाता है। यहाँ रिश्ता टूटने के बजाय एक अलग रूप में बदलने लगता है।

फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष इसका अभिनय है। पंकज कपूर हर दृष्य में अपने चरित्र की टूटन, नाराजगी और भ्रम को बहुत ईमानदारी से जीते हैं। उनकी अभिनय शान्त भी है और अन्दर तक पुर असर भी।पंकज कपूर ने गोपाल की भूमिका की गहराई और सादगी दोनों को खूबसूरती से निभाया है। उनके चेहरे के भाव और डायलॉग डिलीवरी फिल्म की जान हैं। दूसरी तरफ डिंपल कापड़िया अनुसूया के रूप में गरिमा, पछतावा, हिम्मत और नरमी इन चारों भावनाओं को बहुत खूबसूरती से दिखाती हैं। दोनों की केमिस्ट्री रोमाण्टिक नहीं है। यह बहुत पुरानी, थकी हुई लेकिन गहरी साझेदारी जैसी लगती है, जो इस फिल्म की आत्मा बन जाती है। सहायक भूमिकाओं में अपारशक्ति खुराना , समीर सोनी, नौहीद साइरुसी और मानसी पारेख ने भी अपने-ध्अनंध्पढढने हिस्से का काम ईमानदारी से किया है।खासतौर पर कर अपारशक्ति खुराना ने अपने किरदार में हल्की-फुल्की कॉमेडी जोड़ा है। अभिनेता का चरित्र यदि ठीक ठीक लिखा जाता है तो अभिनय का स्कोप उतना ही बढ़ जाता है ।

निर्देशन का जिम्मा सौरभ शुक्ला का था और उन्होंने फिल्म को भी उसी थिएटर वाली सच्चाई के साथ पेश किया हैं जिससे यह यथार्थ के ज्यादा करीब नज़र आती है । फिल्म के कई दृष्य बातचीत पर अर्थात् संविदा पर ही टिके हैं जहाँ सिर्फ दो लोग बैठकर बात कर रहे हैं। कहानी इन्हीं संवादों पर आगे बढ़ती है। पहले हाफ में फिल्म हल्की और दिलचस्प बनी रहती है। लेकिन दूसरे हिस्से में इसकी रफ्तार साफ तौर पर धीमी पड़ जाती है। कुछ भावनात्मक सीन इतने लंबे हैं कि फिल्म स्टोरेज़ ड्रामा जैसी महसूस होने लगती है। कई जगह चरित्रों की गहराई और उनकी आपसी टकराहट असली नहीं लगती। फिल्म बीच-बीच में बोर भी करती है। फिल्म की रफ्तार पूरे समय बराबर नहीं है। कई जगह कहानी ढीली पड़ जाती है। कुछ दृष्य जरूरत से ज्यादा खिंच जाते हैं। थिएटर वाली अनुभूति हर किसी को आसानी से पचती नहीं है । पटकथा में भी उतनी पकड़ नहीं है। कई बार इमोशनल और कॉमिक सीन के बीच बदलाव थोड़ा अचानक लगने लगता है। फिर भी रिश्तों की सच्चाई और किरदारों की ईमानदारी फिल्म को एक बार देखने लायक बना देती है।

आर्थिकी

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

विश्व अर्थव्यवस्था का नया केंद्र बनता भारत

एक समय था जब भारत को केवल एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जाता था, किंतु आज परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल चुकी हैं। आर्थिक वृद्धि, तकनीकी नवाचार, डिजिटल क्रांति, उद्यमिता, विनिर्माण और निवेश के क्षेत्र में भारत जिस गति से आगे बढ़ रहा है, उसने विश्व समुदाय का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

वस्तुतः रियल एस्टेट निवेश न्यास बाजार की तेजी से बढ़ती संरचना, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र में आने वाला परिवर्तन, मजबूत सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर और वैश्विक निवेशकों का बढ़ता विश्वास इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि भारत अब विकास की राह पर आगे बढ़ते हुए वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर है। वास्तव में 21वीं सदी भारत की ही सदी है। यह विचार जब दिया गया, तब लग रहा था कि ये संभव होगा भी कि नहीं! किंतु वर्तमान में जिस तरह के निर्णय राष्ट्रीय एवं समाज स?तर पर लिए जा रहे हैं उन्हें देखकर जरूर लगने लगा है कि भारत के प्राचीन मनीषियों और आधुनिक वैश्विक विचारकों ने जो अपनी दूरदृष्टि से कहा, वह आज साकार रूप में फलीभूत हो हर है।

कई अंतरराष्ट्रीय आर्थिक विश्लेषणों के अनुसार भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन चुका है। हाल के वर्षों में भारत की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर लगातार छह प्रतिशत से अधिक बनी रही है, जोकि अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं से बेहतर प्रदर्शन को दर्शाती है। यह प्रगति भारत की आर्थिक संरचना में हो रहे गहरे परिवर्तन का संकेत भी है। घरेलू मांग का विस्तार, आर्थिक उदारीकरण के बाद निवेश के नए अवसर, डिजिटल ढांचे का विस्तार और युवा कार्यबल ने भारत की आर्थिक शक्ति को नया आधार प्रदान किया है। यही कारण है कि वैश्विक कंपनियां भारत को एक बड़ा बाजार होने के साथ ही दीर्घकालिक आर्थिक शक्ति के रूप में देखने लगी हैं।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एंगस मैडिसन ने अपनी पुस्तक 'द वर्ल्ड इकोनॉमी ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव' में यह लिखा भी है कि 'इतिहास में लंबे समय तक भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का प्रमुख केंद्र रहा है और भविष्य में उसके पुनः उस स्थान को प्राप्त करने की संभावना है।' भारत की आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण उदाहरण रियल एस्टेट निवेश न्यास बाजार का तेजी से बढ़ता आकार है। वित्त वर्ष 2020 में जहां इसका आकार लगभग 27 हजार 100 करोड़ रुपये था, वहीं वित्त वर्ष 2026 के पहले नौ महीनों में यह बढ़कर लगभग एक लाख बहत्तर हजार करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। यह वृद्धि भारत के निवेश ढांचे में आ रहे व्यापक परिवर्तन को दर्शाती है। यह स्थिति इस बात का प्रमाण है कि भारत का वित्तीय तंत्र तेजी से आधुनिक और निवेश उन्मुख बन रहा है।

भारत की आर्थिक उन्नति का दूसरा महत्वपूर्ण आधार तकनीकी क्षेत्र है। उन्नीस सौ नब्बे के दशक के अंत से भारत सॉफ्टवेयर विकास और सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का वैश्विक केंद्र बन गया। आज भारत की डिजिटल पहचान प्रणाली, मोबाइल भुगतान व्यवस्था और इंटरनेट की सुलभता ने करोड़ों लोगों को डिजिटल अर्थव्यवस्था से जोड़ दिया है। प्रसिद्ध अमेरिकी राजनीतिक विश्लेषक 'इयान ब्रेमर' ने अपनी पुस्तक 'एवरी नेशन फॉर इटसेल्फ : विनर्स एंड लूजर्स इन अ जी जीरो वर्ल्ड) में लिखा है, 'इक्कीसवीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की डिजिटल क्षमता और जनसांख्यिकीय शक्ति उसे विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था में एक निर्णायक

भूमिका प्रदान कर सकती है।' वस्तुतः यह पुस्तक वैश्विक राजनीति में आने वाले एक बड़े बदलाव का विश्लेषण करती है, जिसे ब्रेमर 'जी जीरो' की स्थिति कहते हैं। एक तरह से देखें तो वर्तमान में ये सच होता हुआ भी दिखता है। डिजिटल मंचों के माध्यम से सरकारी सेवाओं की पहुंच बढ़ी है, वित्तीय समावेशन मजबूत हुआ है और छोटे व्यवसायों को नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

इसके साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत के विनिर्माण क्षेत्र में एक नया परिवर्तन ला रही है। एक संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार 2035 तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र के मूल्य सृजन में लगभग एक सौ पैंतीस से डेढ़ सौ अरब डॉलर तक का योगदान दे सकती है। यदि भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण की हिस्सेदारी पच्चीस प्रतिशत तक बढ़ाने में सफल होता है और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की हिस्सेदारी 2047 तक पचास प्रतिशत तक पहुंच जाती है, तो यह क्षेत्र तीन ट्रिलियन डॉलर से अधिक की आर्थिक संभावनाएं खोल सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से मशीनों की भविष्यवाणी आधारित मरम्मत, ऊर्जा अनुकूलन, गुणवत्ता जांच और डिजिटल ग्राहक सेवा जैसे अनेक क्षेत्रों में सुधार संभव है। इससे छोटे उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सकेंगे और उत्पादन की लागत भी कम होगी।

यही कारण भी है कि वर्तमान में वित्तीय प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उन्नत तकनीक जैसे क्षेत्रों में हर वर्ष हजारों नई कंपनियां शुरू हो रही हैं। यह उद्यमिता रोजगार सृजन के साथ ही भारत को नवाचार की वैश्विक प्रयोगशाला भी बना रही है। प्रसिद्ध प्रबंधन विचारक 'पीटर ड्रकर' ने अपनी पुस्तक 'इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप' में लिखते हैं कि 'आर्थिक विकास का वास्तविक इंजन नवाचार और उद्यमिता होती है। '

भारत के प्राचीन और आधुनिक विचारकों ने बहुत पहले ही यह संकेत दिया था कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है। स्वामी विवेकानंद ने कहा, 'भारत फिर से उठेगा और दुनिया को आध्यात्मिक तथा नैतिक दिशा देगा।' इसी प्रकार महान दार्शनिक श्री अरविंद ने अपनी पुस्तक 'द रिनेसां इन इंडिया' में लिखा है, भारत की सभ्यता में विश्व को दिशा देने की अद्वितीय क्षमता है और भविष्य में उसका पुनर्जागरण निश्चित है।

भारतीय चिंतक पंडित 'दीनदयाल उपाध्याय' ने भी अपने 'एकात्म मानवदर्शन' के माध्यम से यह कहा है कि भारत का विकास सिर्फ आर्थिक आधार पर नहीं, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित होना चाहिए। उनके अनुसार भारत का विकास मॉडल विश्व के लिए संतुलित और समावेशी विकास का मार्ग प्रस्तुत कर सकता है। आज जब भारत आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक क्षेत्रों में एक साथ प्रगति कर रहा है, तब इन विचारकों की दूरदृष्टि वास्तविकता के रूप में सामने आती दिखाई देती है।

हम देख भी रहे हैं, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भूमिका लगातार मजबूत हो रही है। वैश्विक निवेशक भारत को स्थिर लोकतंत्र, विशाल बाजार और दीर्घकालिक विकास क्षमता वाले देश के रूप में देखते हैं। आधारभूत संरचना विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था, तकनीकी नवाचार और औद्योगिक सुधारों ने भारत की वैश्विक छवि को मजबूत किया है। इन्हीं कारणों के आधार पर हम आज ये कह भी सकते हैं कि अनेक वैश्विक विश्लेषक भारत को आने वाले दशकों में विश्व अर्थव्यवस्था का प्रमुख केंद्र मानते हैं।

एक तरह से देखें तो भारत की वर्तमान विकास यात्रा 'सभ्यता के पुनर्जागरण की कथा' है। निवेश से लेकर तकनीक तक, विनिर्माण से लेकर डिजिटल क्रांति तक और उद्यमिता से लेकर वैश्विक नेतृत्व तक हर क्षेत्र में भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। यदि वर्तमान गति बनी रहती है तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि इक्कीसवीं सदी वास्तव में भारत की सदी बनने की ओर अग्रसर है।

पं. दीनदयाल प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के तहत जिले के मंडलो में प्रशिक्षण वर्ग का आरंभ हुआ

प्रशिक्षण से संगठन को शक्ति और दिशा मिलती है - राजवर्धन सिंह दत्तीगांव

धार। पं. दीनदयाल प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के तहत धार जिले के सभी मंडलो में प्रशिक्षण वर्ग 14 मार्च से 14 अप्रैल तक होने जा रहें है। शनिवार को दो दिवसीय सादलपुर मंडल प्रशिक्षण वर्ग का आरंभ हुआ जिसमें उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, विषय वक्ता पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ,प्रशिक्षण वर्ग जिला संयोजक महामत्री राकेश पटेल मंडल अध्यक्ष आशीष जैन ,प्रशिक्षण वर्ग जिला टोली से अक्षय शर्मा जिला उपाध्यक्ष प्रेमचंद परमार विशेष रूप से उपस्थित रहें।

सर्व प्रथम भारत माता व पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी से चित्रों पर दीप प्रज्जवलित व माल्यार्पण कर सत्र आरंभ किया गया।

प्रथम दिन छः सत्रों में अलग अलग वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपना विचार व्यक्त किए । राजवर्धन सिंह दत्तीगांव ने भाजपा का इतिहास एवं विकास,पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु राठौर ने वैचारिक अधिष्ठान विषय पर और भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय

शर्मा ने सोशल मीडिया नमो एप संगठन एप पर पीपीटी के माध्यम से जानकारी दी। जिला उपाध्यक्ष अमृत जैन द्वारा केंद्र सरकार की योजनाएँ तथा शाम को सत्र में भाजपा जिला महामंत्री देवेंद्र सोनोने ने बुथ प्रबंधन एवं मन की बात और अंत में जिला मंत्री विनीत मंडलोई ने राज्य सरकार की उपलब्धिया पर अपने विचार व्यक्त किए।

भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता राष्ट्रहित और समाजसेवा के संकल्प के साथ संगठन को मजबूत बनाने में निरंतर सक्रिय है। भाजपा की सफलता का मूल मंत्र, प्रशिक्षण और विचारधारा पर अडिग प्रतिबद्धता है।

पूर्व मंत्री राजवर्धन दत्तीगांव ने कहा कि प्रशिक्षण से संगठन को शक्ति और दिशा मिलती है। प्रशिक्षण वर्ग भाजपा की कार्यपद्धति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय जनता पार्टी की निरंतर सफलता, लोकसभा व विधानसभा चुनावों में जीत हासिल कर निरंतर सत्ता में बने रहना, हमारे प्रशिक्षण और कार्य पद्धतियों का परिणाम है। यदि हम सही तरीके से प्रशिक्षित नहीं होते, तो इतनी बड़ी सफलता हासिल नहीं कर पाते। भाजपा ही एकमात्र ऐसा दल है जिसे अपनी विशिष्ट विचारधारा और कार्यपद्धति के लिए जाना जाता है।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि सादलपुर मंडल प्रशिक्षण वर्ग में मंडल के नवीन पदाधिकारी शक्ति केंद्र और बुथ के अपेक्षित भाजपा कार्यकर्ता सहित 100 से अधिक भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहें। वर्ग गीत मंडल उपाध्यक्ष चन्दर सिंह डोड व संचालन राधेश्याम निगम ने किया।

दिवसीय कृषि विज्ञान मेला एवं जैविक हाट का शुभारंभ

धार। सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत जिला स्तरीय दो दिवसीय कृषि विज्ञान मेला एवं जैविक हाट का शुभारंभ आज श्रीजी आनंदा रिसोर्ट, धार में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्रजेशसिंह चौहान, किसान मोर्चा महामंत्री, रतनलाल अमोदिया, कृषक प्रतिनिधि तथा अमोल पाटीदार, जिला प्रतिनिधि भारतीय किसान संघ धार थे।

रतनलाल अमोदिया ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि जैविक एवं प्राकृतिक खेती को अपनाकर कम लागत में अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। उन्होंने किसानों से अपने परिवार के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की अपील की।

ब्रजेशसिंह चौहान ने किसानों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि किसानों ने अपना अमूल्य समय निकालकर कृषि मेले में भाग लिया है। उन्होंने किसानों से मेले में लगी कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन कर कृषि वैज्ञानिकों से तकनीकी जानकारी प्राप्त करने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि स्वयं भी अपने खेतों के लगभग 50 प्रतिशत क्षेत्र में जैविक एवं प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि रासायनिक खेती से भूमि की उर्वरता प्रभावित हो रही है, जबकि प्राकृतिक खेती से इसमें सुधार संभव है। श्री अमोल पाटीदार ने किसानों से नरवाई (फसल अवशेष) नहीं जलाने का आव्हान किया तथा गेहूं के अवशेषों को पाटा चलाकर मिट्टी में मिलाने की सलाह दी।

सेवानिवृत्त कृषि वैज्ञानिक नरेन्द्र कुमार ताम्बे ने किसानों को जैविक एवं प्राकृतिक खेती अपनाने के संबंध में प्रशिक्षण दिया। वहीं विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (एनटीपीसी) के प्रतिनिधि अभिनव कुमार ने नरवाई प्रबंधन पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि किसान फसल अवशेषों को न जलाकर उनका उपयोग कर अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर सकते हैं। भविष्य में फसल अवशेष खरीद कर उद्योग स्थापित करने की कार्ययोजना प्रस्तावित है, जिससे किसानों को अतिरिक्त आय के अवसर मिलेंगे। कार्यक्रम में ग्राम लबरावदा के कृषक नरेन्द्र राठौर ने भी अपने अनुभव साझा किए।कार्यक्रम की शुरुआत परियोजना संचालक आत्मा त्रिलोकचंद छावनिया द्वारा मेले के उद्देश्य एवं प्राकृतिक खेती के महत्व की जानकारी देकर की गई।

इसके पश्चात उप संचालक कृषि ज्ञानसिंह मोहनिया ने कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी।इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा आत्मा योजना अंतर्गत जिला स्तरीय पांच सर्वोत्तम कृषक पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण-पत्र, मोमेंटो तथा 25,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि डीबीटी के माध्यम से प्रदान की गई।कार्यक्रम का संचालन रामगोपाल शर्मा एवं के.एस. झणिया, उप परियोजना संचालक आत्मा द्वारा किया गया तथा अंत में परियोजना संचालक आत्मा टी.सी. छावनिया ने आभार व्यक्त किया।

मिली सौगात

पब्लिक हेल्थ यूनिट लैब का लोकार्पण, मरीजों को महानगरों में नहीं जाना पड़ेगा: विधायक विजयपालसिंह

सोहागपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में 50लाख की राशि से नवनिर्मित ब्लाक पब्लिक हेल्थ यूनिट का लोकार्पण क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह के आतिथ्य एवं नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने नव निर्मित ब्लाक पब्लिक हेल्थ यूनिट का फीता काटकर एवं नाम पटिक्का से पर्दा हटाकर यूनिट का शुभारंभ किया। इस

अवसर लोकार्पण समारोह को संबोधित करते क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने कहा कि उत्कृष्ट स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना जनप्रतिनिधियों की प्राथमिकता है । इसी तारतम्य में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।इस क्रम में 50लाख रुपये की लागत से निर्मित नवीन हेल्थ यूनिट को प्रारंभ किया जा रहा है। जिससे अब क्षेत्र के मरीजों को अब जांच के लिए महानगरों में नहीं जाना पड़ेगा। इससे नागरिकों का समय एवं व्यय में भी बचत होगी।अब यहां करीबन 80 से अधिक प्रकार की जांचें मरीजों के लिए उपलब्ध होंगी। जिसमें कई महत्वपूर्ण एवं जटिल जांच भी शामिल हैं। आपने आगे कहा कि किसी भी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा दो सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं। जिसमें अस्पताल, स्कूल और प्रयोगशालाएं समाज की बुनियादी आवश्यकता हैं । दोनों को आधुनिकता प्रदान करना हमारी प्राथमिकता में है।इस अवसर पर बीएमओ डाक्टर रेखा गौर, डॉ कमलेश विश्वास, ए के शाक्य , डाक्टर नेहा सहित जनप्रतिनिधि एवं भाजपा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। जनप्रतिनिधियों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डाक्टरों एवं कर्मचारियों ने नवर्निर्मित लैब का निरीक्षण किया। आपने लैब यूनिट की विस्तृत जानकारी ली। इसके पूर्व नवीन पब्लिक हेल्थ यूनिट से होने वाली पैथालॉजी जांच के संबंध में विस्तृत सारगर्भित जानकारी दी गई।

नर्मदापुरम में वीडियो कान्फ्रेंसिंग

प्रदेश में घरेलू गैस सिलेंडर की आपूर्ति प्रभावित न हो, कलेक्टर नियमित मॉनिटरिंग करें :अनुराग जैन

सोहागपुर। मुख्य सचिव अनुराग जैन ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी कलेक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों को घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडर की आपूर्ति तथा कमर्शियल गैस सिलेंडर के उपयोग के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्य सचिव श्री जैन ने निर्देशित किया कि प्रदेश में कहीं भी घरेलू गैस सिलेंडर की आपूर्ति प्रभावित न हो, यह सुनिश्चित किया जाए। जिला नर्मदापुरम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के अवसर पर कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष से कलेक्टर नर्मदापुरम सुश्री सोनिया मीना, पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस थोटा, सीईओ जिला पंचायत हिमांशु जैन, अपर कलेक्टर अनिल जैन सहित अन्य संबंधित अधिकारियों ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग को ध्यानपूर्वक

सुना। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने आगे कहा कि किसी भी प्रकार की अफवाह से उत्पन्न होने वाली कानून व्यवस्था की स्थिति पर कड़ी निगरानी रखी जाए। इसके साथ आपने कहा कि सभी पुलिस अधीक्षक अपने-अपने जिलों में पेट्रोलिंग बढ़ाएं। ताकि गैस सिलेंडर की आपूर्ति को बाधित करने जैसे किसी भी प्रयास को समय रहते विफल किया जा सके। वहीं मुख्य सचिव ने सभी कलेक्टरों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने जिलों में घरेलू गैस सिलेंडर की आपूर्ति की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा पूरे प्रशासनिक अमले को संवेदनशील बनाएं, जिससे किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति निर्मित न हो। आपने वीडियो कान्फ्रेंसिंग में बताया कि घरेलू गैस सिलेंडर बुकिंग के सेंट्रल सर्वर में तकनीकी समस्या के कारण कुछ समय के लिए आई दिक्कत को दूर कर लिया गया है और अब बुकिंग एवं आपूर्ति की प्रक्रिया सुचारू रूप से जारी रहेगी।मुख्य सचिव श्री जैन ने यह भी निर्देश दिए कि घरेलू गैस सिलेंडरों का उपयोग व्यावसायिक कार्यों में न होने पाए। प्रदेश में घरेलू गैस सिलेंडरों के लिए पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध है । सभी कलेक्टर यह सुनिश्चित करें कि नागरिकों के बीच किसी भी प्रकार की अनावश्यक भ्रांति की स्थिति उत्पन्न न हो।

लोक अदालत में सुलझे सैकड़ों मामले, टूटे परिवार फिर हुए एक

बैतूल। शनिवार को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों लंबित प्रकरणों का आपसी सहमति से निराकरण किया गया। लोक अदालत में कई ऐसे पारिवारिक विवाद भी सुलझे, जिसमें मनमुटाव के कारण परिवार लंबे समय से अलग-अलग रह रहे थे। लोक अदालत के माध्यम से इन टूटे रिश्तों को फिर से जोड़ते हुए साथ रहने के लिए राजी किया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से प्राप्त जानकारी के अनुसार लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के मामलों के निराकरण के लिए कुल 27 खंडपीठों का गठन किया गया था। इन खंडपीठों में सड़क दुर्घटना, पारिवारिक विवाद, चेक बाउंस, मोटर व्हीकल, विद्युत चोरी, भूमि अधिग्रहण, ट्रैफिक चालान और श्रमिक मामलों सहित कई प्रकरणों की सुनवाई कर आपसी सहमति से निपटारा किया गया। कुटुंब न्यायालय में भी कई पारिवारिक मामलों का समाधान हुआ। इनमें मिलानपुर निवासी एक दंपति का मामला विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। पति-पत्नी के बीच विवाद के कारण दोनों करीब दो वर्षों से अलग रह रहे थे। लोक अदालत में समझाइश और आपसी सहमति के बाद दोनों के बीच सुलह हो गई और वे पुनः साथ रहने के लिए राजी हो गए। इसके अलावा पंजाब नेशनल बैंक से संबंधित एक चेक बाउंस का मामला भी लोक अदालत में सुलझाया गया। एमपीईबी से जुड़े एक मामले में लेखीराम यादव का राजीनामा कराया गया। इन प्रकरणों के समाधान में अधिवक्ता हीरामन सूर्यवंशी, संजय शुक्ला तथा सहयोगी अधिवक्ता अर्जुन लिखितकर, राजकुमार कांगले, आनंद खातरकर और दीपांशु का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आर्थिक संकट से जूझ रही बैतूल नपा की जेब में आए 60 लाख रुपए- नगर पालिका कार्यालय में आयोजित लोक अदालत में

बकायेदारों ने पहुंचकर करों का भुगतान किया और सरचार्ज का लाभ लिया। नपा के वरिष्ठ राजस्व निरीक्षक ब्रजगोपाल परते ने बताया कि संपत्ति कर, समेकित कर, सामान्य जलकर, जल शुल्क, दुकान/भवन भूमि किराया, शिक्षा उपकर, नगरीय विकास उपकर के बकायेदारों ने करों का भुगतान किया। शाम 7 बजे तक नगरपालिका को टैक्स के माध्यम से करीब 60 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। बताया जा रहा है कि लोक अदालत के लिए लगभग 850 बड़े बकायेदारों को नोटिस जारी किए गए थे, जिन पर संपत्ति कर, जल कर और दुकानों का किराया बकाया था। लोक अदालत में बकाया राशि जमा कराई गई। इसके परिणामस्वरूप नगर पालिका को लाखों रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ।

नगरपालिका में लोक अदालत में 120 प्रकरणों का निपटारा, 10 लाख से ज्यादा की वसूली

सारनी। नगर पालिका कार्यालय में शनिवार 14 मार्च को नेशनल लोक अदालत का आयोजन सुबह 11 बजे से अपरान्ह 4 बजे तक किया गया। लोक अदालत में 120 प्रकरणों का निपटारा कर 10 लाख से ज्यादा की कर वसूली की गई। मुख्य नगर पालिका अधिकारी सी.के. मेश्राम ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार शनिवार 14 मार्च को लोक आदालत का आयोजन किया गया। इसमें संपत्तिकर, समेकित कर, शिक्षा उपकर, विकास उपकर एवं जलकर के बकायदारों के प्रकरणों की सुनवाई की गई। आयोजित लोक अदालत में संपत्तिकर समेत अन्य बकाया करों के प्रकरणों की सुनवाई हुई। इसमें कुल मिलाकर 120 प्रकरणों को सुना गया। इनमें सुलह कर लगभग 10 लाख रूपए से ज्यादा की राजस्व वसूली की गई। प्रकरण में सुनवाई के दौरान बकायदारों को नियमानुसार छूट भी प्रदान की गई। मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने कहा कि जिन लोगों ने अभी तक बकाया एवं चालू टैक्स नहीं जमा किया है वे 31 मार्च के पूर्व इसे जमा करा देवें। साथ ही नल कनेक्शन शुल्क एवं बकाया जलकर भी समयसीमा में जमा कर आगामी कार्यवाही से बचें। इस दौरान राजस्व उप निरीक्षक हितेश शाक्य, सुखदेव बोरहपी, जसवंत विश्वकर्मा, स्मिता धोटे, शिवम दुबे, रवि नागले, गुरूदयाल हाथिया, उमेश परते, अनुराग सहगल, सुशील सहाने, सुखदेव सिंदूर, पुष्पा चिल्हाटे, पप्पी अश्वारे उपस्थित रहे।

रसोई गैस की मारामारी के बीच उपभोक्ता हो रहे परेशान

देवास। वैश्विक युद्ध के कारण देशभर में रसोई गैस की किल्लत बनी हुई है । शहर की गैस एजेंसियों पर उपभोक्ता मारे मारे फिर रहे है । उपभोक्ताओं को मोबाईल पर बुकिंग करने के साथ ओटीपी माँगा जा रहा है मगर लाइनें क्रश हो जाने से न तो बुकिंग हो पा रहीं है और न ओटीपी आ रहे है । इधर जिला आपूर्ति अधिकारी देवास ने बताया कि घरेलू गैस रिफिल बुकिंग प्रदाय के संबंध में उपभोक्ताओं की सुविधा हेतु कार्यालय कलेक्टर (खाद्य) शाखा जिला देवास में कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। कंट्रोल रूम में श्री भानसिंह राय, सहायक आपूर्ति अधिकारी, मोबाईल नंबर 9826075957, सहायक श्री चेतन वर्मा, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी, मोबाईल नंबर 9826944000, सहायक श्री संजय पंवार, कंप्यूटर ऑपरेटर, मोबाईल नंबर 9713126951 की ड्युटी लगाई गई है। घरेलू गैस की कालाबाजारी एवं दुरूपयोग को रोकने हेतु खाद्य विभाग द्वारा नियमित रूप से कार्यवाहियां की जा रही है। उन्होंने बताया कि 13 मार्च शुक्रवार को देवास नगर में 15 प्रतिष्ठानों पर जांच की गई जिसमें 04 प्रतिष्ठानों में घरेलू गैस का व्यवसायिक उपयोग करने पाये जाने पर 06 घरेलू गैस सिलेण्डरों को जप्त किया गया। उन्होंने बताया कि राज्य शासन से वाणिज्यिक श्रेणी के एलपीजी गैस की उपलब्धता के संबंध में प्राप्त निर्देशानुसार व्यवसायिक गैस सिलेण्डर चिकित्सालय एवं शैक्षणिक संस्थाओं के अलावा किसी और वाणिज्यिक उपभोक्ताओं (होटल, मॉल, बल्क एलपीजी का उपयोग करने वाले औद्योगिक क्षेत्र, फैक्ट्री आदि) को कमर्शियल एलपीजी (बल्क एंड पैक्ड) की सप्लाई नहीं की जाएगी। घरेलू गैस के उपभोक्ताओं को नियमित रूप से सप्लाई सुनिश्चित की गई है।

भगवान झूलेलाल जयंती पर 5 दिवसीय रंगारंग कार्यक्रम होंगें विभिन्न आयोजन होंगे

देवास। सिन्धी समाज के आराध्य भगवान झूलेलाल की जयंती के अवसर पर शहर में 5 दिवसीय रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत सोमवार 16 मार्च को सुबह 11 बजे सिन्धी भवन ट्रस्ट, उज्जैन रोड स्थित भगवान झूलेलाल मंदिर पर ध्वजा चढ़ाने के साथ होगी। समाज के ब्राह्मणों की उपस्थिति में पूजा अर्चना की जाएगी।

इस अवसर पर रोशनी आई क्लिनिक द्वारा विशाल निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर लगाया जाएगा। वहीं डॉ. प्रतीक श्रीवास्तव द्वारा दंत परीक्षण तथा डॉ. त्रिशीता राजानी द्वारा स्किन जांच की जाएगी। स्वास्थ्य जांच के बाद समाज अध्यक्ष अनिल पंजवानी एवं उनके परिवार द्वारा भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

मंगलवार को महिला मंडल अध्यक्ष दिव्या आहूजा, पार्षद की टीम द्वारा महाभारत, आशियान, अंताक्षरी सहित विभिन्न रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे।

सचिव अशोक पेशवानी ने बताया कि सिन्धी समाज ने शौर्य, पराक्रम और वीरता के साथ स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भगवान झूलेलाल के आशीर्वाद से समाज हमेशा देश के विकास और सेवा कार्यों में सक्रिय रूप से सहयोग करता रहा है। उक्त जानकारी सहमीडिया प्रभारी नंदकिशोर खत्री ने दी।

बंटी वासनिक बने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

बैतूल। आल इंडिया एसटी/एससी/ओबीसी माइनॉरिटी महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील कुमार रामटेके ने शासकीय सेवा के दौरान वित्त विभाग में ऑडिटर की सेवा देते हुए सामाजिक, धार्मिक कार्यों में भी अपने दायित्व का निर्वहन करने वाले राजेन्द्र कुमार वासनिक (बंटी वासनिक) को इस महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त किया हैं। राष्ट्रीय स्तर पर श्री वासनिक की नियुक्ति पर महासंघ के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सामाजिक बंधुओं, परिजनों ,

शुभचिंतकों, ईष्टमित्रों ने उन्हें बधाई प्रेषित की है। ऑल इंडिया एसटी/एससी /ओबीसी माइनॉरिटी के इस महासंघ में मध्य प्रदेश के बैतूल जिले से श्री वासनिक सहित देश भर में आठ उपाध्यक्ष और महासचिव ,सचिव सहित कुल 23 सदस्यों की नियुक्ति की गई है । जारी नियुक्ति पत्र के अनुसार नियुक्ति पत्र की प्रतिलिपि बैतूल सहित चार जिलों के कलेक्टर व एसपी को भी इसकी जानकारी भेजी गई है जिसमें बैतूल, भोपाल ,पांडूर्णा और छिंदवाड़ा शामिल है।

निःशुल्क पंचकर्म शिविर में 360 लोगों ने लिया उपचार का लाभ

बैतूल। आयुष विभाग द्वारा आमजन के बेहतर स्वास्थ्य और आयुर्वेद के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित निःशुल्क पंचकर्म चिकित्सा शिविर को लोगों का अच्छा प्रतिसाद मिला। जिला आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी और जिला चिकित्सालय परिसर स्थित आयुष विंग में आयोजित

● टिकारी आयुर्वेद चिकित्सालय और आयुष विंग में लगा नि : शुल्क पंचकर्म शिविर

इस शिविर में बड़ी संख्या में मरीज पहुंचे और उन्होंने परामर्श के साथ उपचार का लाभ लिया। जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर के निर्देशन में आयोजित शिविर का संचालन अनुभवी डॉक्टरों और विशेषज्ञों की टीम द्वारा किया गया। जिला आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी में नोडल अधिकारी डॉ. प्रियंका और सहायक नोडल अधिकारी डॉ. नरेंद्र डडोरे के मार्गदर्शन में मरीजों को उपचार दिया गया। वहीं जिला

चिकित्सालय परिसर स्थित आयुष विंग में नोडल अधिकारी डॉ. प्रियंका उइके और सहायक नोडल अधिकारी डॉ. सरिता डहेरिया के मार्गदर्शन में विभाग के कर्मचारियों ने मरीजों को सेवाएं प्रदान कीं। शिविर के दौरान लोगों में पंचकर्म चिकित्सा के प्रति विशेष रुचि देखने को मिली। मरीजों ने सामान्य बीमारियों के लिए परामर्श लेने के साथ ही पंचकर्म जैसी प्राचीन और प्रभावशाली आयुर्वेदिक पद्धति के बारे में जानकारी भी प्राप्त की। आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर रीना चौकीकर ने बताया कि पंचकर्म शरीर के शुद्धिकरण की प्रक्रिया है, जो कई पुरानी और जटिल बीमारियों में लाभकारी सिद्ध होती है। आयुष विभाग समय-समय पर ऐसे निःशुल्क शिविरों का आयोजन करता है, ताकि समाज के हर वर्ग तक आयुर्वेद और पंचकर्म का लाभ पहुंचाया जा सके। शिविर में आए लोगों ने विभाग की इस पहल की सराहना की और बताया कि इस तरह के आयोजनों से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को उपचार की सुविधा मिलती है। शिविर में कुल 360 लाभार्थियों ने उपचार और परामर्श का लाभ प्राप्त किया।

शॉर्ट फिल्म से चुराई 'सैयारा' की कहानी

फिल्म 'सैयारा' के निर्माताओं पर अभिनेता और गायक अमित जाधव ने कहानी चोरी करने का आरोप लगाया है। उनका दावा है कि अहान पांडे और अनीत पाड्डा अभिनीत यह फिल्म उनकी 2019 की शॉर्ट फिल्म 'ख्वाबों' की नकल है। अमित जाधव का आरोप है कि मोहित सूरी के निर्देशन में बनी फिल्म 'सैयारा' की कहानी उनकी लघु फिल्म 'ख्वाबों' से काफी मिलती-जुलती है।

अमित जाधव के अनुसार दोनों कहानियों में संगीत का मुख्य आधार और कथानक के कई मोड़ समान हैं। लेकिन, इसके बावजूद उन्हें कोई श्रेय नहीं दिया गया। उन्होंने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि फिल्म रिलीज होने के बाद उनके दोस्तों ने उन्हें फोन कर समानता की ओर इशारा किया, जिसे देखकर वह दंग रह गए। जाधव का कहना है कि उन्होंने फिल्म के निर्माताओं से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। जाधव ने एक महत्वपूर्ण खुलासा करते हुए बताया कि साल 2022 में यशराज फिल्म्स के टैलेंट डिवीजन ने उनसे इंस्टाग्राम के जरिए संपर्क किया था। हालांकि उस समय उन्हें यह नहीं बताया गया कि यह संपर्क किस प्रोजेक्ट के लिए किया जा रहा है।

अमित जाधव की शॉर्ट फिल्म 'ख्वाबों' की बेसिक कहानी की बात करें, तो यह एक प्यार में डूबे कपल के बारे में है, लेकिन एक दिन इस कपल की दुनिया तब उजड़ जाती है, जब लड़की की याददाश्त चली जाती है। एक दिन वह गायब हो जाती है, तो उसका प्रेमी एक गाना गाकर उसे ढूंढने की कोशिश करता है। 'सैयारा' की कहानी भी एकदम यही है। अमित जाधव ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें उन्होंने अपनी शॉर्ट फिल्म 'ख्वाबों' के साथ 'सैयारा' की समानताएं गिनाई हैं।

जाधव का कहना है कि उन्होंने उस समय किसी ऑडिशन में हिस्सा नहीं लिया, इसलिए उन्हें समझ नहीं आया कि उन्हें क्यों मैसेज किया गया। अब उन्हें संदेह है कि शायद उसी समय उनकी कहानी के बारे में जानकारी ली गई थी। उन्होंने दावा किया कि फिल्म रिलीज के बाद उन्होंने स्पष्टीकरण के लिए दो बार ईमेल भी किए, लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। जाधव ने साझा किया कि इस पूरी स्थिति ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को काफी प्रभावित किया है। वह पिछले कई वर्षों से अपनी शॉर्ट फिल्म को एक फीचर फिल्म के रूप में विकसित करने पर काम कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि 'सैयारा' की रिलीज के बाद वह इतने टूट गए थे कि उन्होंने आत्महत्या तक का विचार कर लिया था, लेकिन उनके माता-पिता की सजगता से उनकी जान बच गई। जाधव ने कहा कि उन्हें लगा कि दुनिया उन्हें सफल होते नहीं देखना चाहती। उन्होंने यह भी बताया कि वह इस कहानी पर

एक स्क्रिप्ट तैयार कर चुके थे और 2025 के लिए निर्माता भी मिल गए थे, लेकिन 'सैयारा' के आने से उनके सारे प्लान बर्बाद हो गए। जब जाधव से पूछा गया कि क्या उन्होंने अपनी कहानी को रजिस्टर्ड कराया था, तो उन्होंने बताया कि वे 'स्क्रीन राइटर एसोसिएशन' के सदस्य हैं। हालांकि उन्होंने 2019 में कहानी का पंजीकरण इसलिए नहीं कराया क्योंकि उनकी लघु फिल्म पहले से ही सार्वजनिक रूप से ऑनलाइन उपलब्ध थी, जिसे वह एक ठोस सबूत मानते हैं।

फिलहाल जाधव किसी कानूनी लड़ाई के बजाय केवल अपने काम के लिए स्वीकृति और श्रेय चाहते हैं। उनका कहना है कि अगर उन्हें क्रेडिट दिया जाता है या किसी अन्य प्रोजेक्ट में काम मिलता है, तो वह संतुष्ट होंगे। मोहित सूरी द्वारा निर्देशित 'सैयारा' एक रोमांटिक म्यूजिकल ड्रामा है, जो एक परेशान गायक कृष कपूर और दिल टूटने के दर्द से उबर रही कवयित्री वाणी बत्रा की कहानी है। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे कृष वाणी की कविताओं को संगीत में बदलता है, लेकिन उनकी प्रेम कहानी में तब त्रासदी आती है जब वाणी को अर्ली-ऑनसेट अल्जाइमर का पता चलता है।

पिछले साल जब 'सैयारा' रिलीज हुई थी, तो इसकी कहानी कोरियन फिल्म 'ए मोमेंट टू रिमेंबर' से मिलती-जुलती बताई गई थी। वह फिल्म साल 2004 में आई थी। लेकिन, अमित जाधव का कहना है कि उस कोरियन फिल्म से ज्यादा 'सैयारा' की कहानी उनकी शॉर्ट फिल्म 'ख्वाबों' से मिलती है। फिलहाल, मोहित सूरी या यशराज फिल्म्स की ओर से अमित जाधव के इन दावों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

रियल बॉक्स

1950 के दशक का सिनेमा और आदर्शवाद

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी सिनेमा का इतिहास केवल मनोरंजन का इतिहास नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के बदलते विचारों, संघर्षों और सपनों का भी इतिहास है। 1950 का दशक इस दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यह वह दौर था जब आज़ादी के बाद देश अपनी नई पहचान बना रहा था और वही प्रक्रिया हिंदी फिल्मों में भी दिखाई दे रही थी। इस समय के फिल्मी नायक केवल प्रेमी या साहसी व्यक्ति नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिकता और आदर्शवाद के प्रतीक बनकर सामने आए। आजादी के बाद नायक का चरित्र बदलता गया। भारत की आजादी से पहले बनी फिल्मों में नायक का स्वरूप अलग था। उस समय फिल्मों में पौराणिक कथाएँ, ऐतिहासिक विषय या मनोरंजन प्रधान कहानियाँ ज्यादा होती थीं। नायक अक्सर संघर्षशील जरूर होता था, लेकिन उसमें वह सामाजिक चेतना नहीं थी जो आजादी के बाद दिखाई देने लगी। 1947 में देश के स्वतंत्र होने के बाद भारतीय समाज में नए सपनों का जन्म हुआ। गरीबी, असमानता, शोषण और सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याओं से जूझते हुए भी लोगों के मन में एक बेहतर समाज बनाने की आकांक्षा थी। इसी सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभाव हिंदी फिल्मों के नायक पर पड़ा। 1950 के दशक में फिल्मी नायक आदर्शवादी, संवेदनशील और समाज के प्रति जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में सामने आया।

1950 का दशक कई महान फिल्मकारों का स्वर्णिम काल भी था। इस समय राज कपूर, बिमल रॉय, गुरु दत्त, मेहबूब खान, चेतन आनंद, देव आनंद और ख्वाजा अहमद अब्बास जैसे रचनात्मक फिल्मकार सक्रिय थे। इन फिल्मकारों ने केवल मनोरंजन के लिए फिल्में नहीं बनाई, बल्कि समाज के सामने महत्वपूर्ण सवाल भी खड़े किए। उनके नायक सामाजिक अन्याय, गरीबी और नैतिक संकट से जूझते हुए दिखाई देते हैं। 1950 के दशक की फिल्मों ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय पहचान भी दिलाई। उस समय की कई फिल्में विदेशों में प्रदर्शित हुई और सराही गईं। राज कपूर की फिल्में विशेष रूप से सोवियत संघ, चीन और पूर्वी यूरोप के देशों में बहुत लोकप्रिय हुईं। उनके अभिनय और निर्देशन ने भारतीय सिनेमा को वैश्विक मंच पर पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज कपूर का नायक आम आदमी का प्रतिनिधि था गरीब, संघर्षशील लेकिन आशावादी। यही कारण है कि वह दुनिया भर के दर्शकों को प्रभावित कर सका।

1950 के दशक का भारतीय समाज राजनीतिक रूप से भी एक नई दिशा की ओर बढ़ रहा था। उस समय देश में समाजवादी विचारधारा का प्रभाव था। इस विचारधारा का असर फिल्मों पर भी पड़ा और फिल्मकारों ने अपने नायकों को समाज की समस्याओं से जूझने वाला पात्र बनाया। इस दौर की फिल्मों में अमीर-गरीब का अंतर, मजदूरों की समस्याएं, शोषण, जातिवाद और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दे प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। नायक इन समस्याओं के खिलाफ खड़ा होने वाला व्यक्ति बन जाता है। राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। इस फिल्म में नायक गरीबी से लड़ते हुए शहर आता है और अमीर बनने की चाह में गलत रास्ते पर चला जाता है। लेकिन, अंततः उसकी नैतिक चेतना जागती है और वह सही रास्ते को अपनाता है। यह कहानी केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस समय के समाज की नैतिक दुविधा को भी दर्शाती है।

1950 के दशक की फिल्मों का नायक आदर्शवादी था, लेकिन वह पूरी तरह निष्कलंक नहीं था। उसमें कमजोरियाँ भी थीं और वह परिस्थितियों के दबाव में गलत निर्णय भी ले सकता था। लेकिन अंततः वह नैतिकता और सच्चाई की ओर लौटता है। उदाहरण के तौर पर 'मदर इंडिया' में दिखाई देने वाला संघर्ष केवल एक माँ का नहीं, बल्कि भारतीय समाज की नैतिकता का प्रतीक है। इसी तरह 'जागते रहो' और 'आवारा' जैसी फिल्मों में भी समाज की विसंगतियों को नायक के माध्यम से उजागर किया गया। इन फिल्मों में नायक केवल प्रेम या व्यक्तिगत

सफलता की तलाश में नहीं रहता, बल्कि वह समाज में न्याय और समानता स्थापित करने की कोशिश करता है। इस दौर के नायक की खासियत है कि ये प्रेम के प्रति संकोच और सामाजिक दबाव में रहता था। 1950 के दशक के नायक की एक विशेषता यह भी थी कि वह प्रेम के मामले में अक्सर कमजोर या संकोची दिखाई देता था।

उस समय का समाज पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक प्रतिष्ठा को बहुत महत्व देता था। इसलिए फिल्मों में भी प्रेम को अक्सर त्याग और बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया गया। बिमल रॉय की फिल्म 'देवदास' इसका प्रमुख उदाहरण है। इस फिल्म का नायक प्रेम तो करता है, लेकिन सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत कमजोरी के कारण उसे निभा नहीं पाता। परिणामस्वरूप उसका जीवन त्रासदी में बदल जाता है। इसी तरह 'प्यासा' में भी नायक समाज से निराश और आहत दिखाई देता है। वह संवेदनशील है, लेकिन समाज उसकी भावनाओं को समझने में असफल रहता है। इन फिल्मों में प्रेम केवल रोमांटिक भावना नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना से टकराने वाली एक संवेदनशील स्थिति के रूप में सामने आता है। 1950 का दशक हिंदी सिनेमा में यथार्थवाद के उदय का भी समय था। कई फिल्मकारों ने समाज की वास्तविक समस्याओं को पर्दे पर उतारने का प्रयास किया। इस दिशा में 'दो बीघा जमीन' एक मील का पत्थर मानी जाती है। यह फिल्म किसान के संघर्ष और गरीबी की त्रासदी को बेहद मार्मिक तरीके से प्रस्तुत करती है। इसमें नायक कोई सुपरहीरो नहीं, बल्कि एक साधारण किसान है जो अपने परिवार और जमीन को बचाने के लिए संघर्ष करता है। यह फिल्म उस दौर के सिनेमा की सामाजिक संवेदनशीलता को दर्शाती है। इस समय सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी बेहतर हुआ।

1950 के दशक की फिल्मों में समाज की अनेक समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया। जातिवाद, गरीबी, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दों को लेकर कई फिल्में बनीं। इन फिल्मों में नायक केवल व्यक्तिगत संघर्ष नहीं करता, बल्कि समाज की समस्याओं के खिलाफ भी आवाज उठाता है। वह अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है और अपने आदर्शों से समझौता नहीं करता। इस तरह फिल्मी नायक समाज के नैतिक मार्गदर्शक के रूप में सामने आता है। 1950 के दशक का नायक आज भी हिंदी सिनेमा को प्रभावित करता है। भले ही समय के साथ फिल्मों की शैली और तकनीक बदल गई हो, लेकिन नायक के चरित्र में आदर्शवाद और सामाजिक जिम्मेदारी का तत्व अब भी दिखाई देता है। आज के कई फिल्मकार भी सामाजिक मुद्दों पर फिल्में बना रहे हैं और अपने नायकों को केवल एक्शन हीरो के रूप में नहीं, बल्कि संवेदनशील और जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस दृष्टि से 1950 का दशक हिंदी सिनेमा के लिए एक प्रेरणादायक काल माना जा सकता है। 1950 का दशक हिंदी फिल्मों का आदर्शवादी और वैचारिक दौर था। इस समय के नायक केवल मनोरंजन का साधन नहीं थे, बल्कि वे समाज के नैतिक मूल्यों और आदर्शों के प्रतिनिधि थे। उनके संघर्ष, उनकी कमजोरियाँ और उनकी नैतिक जीत उस समय के भारतीय समाज की आकांक्षाओं को दर्शाती थीं। आज जब सिनेमा तेजी से बदल रहा है और मनोरंजन के नए रूप सामने आ रहे हैं, तब भी 1950 के दशक का नायक हमें यह याद दिलाता है कि सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाली एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक शक्ति भी है। इसलिए जब भी हिंदी फिल्मों के नायक पर से दर्शकों का विश्वास डगमगाएगा, तब उसे 1950 के दशक के उसी आदर्शवादी नायक से प्रेरणा लेनी पड़ेगी, जिसने सिनेमा को सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का सशक्त माध्यम बनाया।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

रणवीर सिंह की इस विलेन से बड़ी टक्कर

रणवीर सिंह की 'धुरंधर 2' का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। पता चला कि 'धुरंधर' को दुनियाभर में फिर से रिलीज किया जा रहा है। हालांकि, इस वक्त 'धुरंधर 2' के पेड प्रीव्यू के लिए एडवांस बुकिंग चल रही है। बीते दिनों आरी-आरी सॉन्ग रिलीज हुआ, जिसमें फिल्म को लेकर एक तगड़ा हिंट मिल गया। रहमान डकैत से लड़ाई तो कुछ नहीं थी, रणवीर सिंह इस विलेन को कड़ी टक्कर देने वाले हैं। हमजा और रहमान डकैत की 'जंग' को सबसे बड़ी लड़ाई मानने वालों को सरप्राइज मिलने वाला है।

रणवीर सिंह विलेन को कड़ी टक्कर देने वाले हैं। एक फ्रेम ने आदित्य धर की पूरी प्लानिंग का रिलीज से पहले ही खुलासा कर दिया, पर क्या ये उनकी चाल थी, फैन्स के बीच बज क्रिएट करने की। हाल ही में 'धुरंधर 2' का टीजर आया था, जिसमें बैकग्राउंड में पुराने पंजाबी गाने 'आरी-आरी' का न्यू वर्जन सुनने को मिला। अब मेकर्स ने बीते दिन उस गाने रिलीज कर दिया। जिसके एक फ्रेम में रणवीर सिंह एकदम खूनम खून हुए दिख रहे हैं। अब यह पार्ट 2 का क्लाइमैक्स है या कुछ और अब तक तो कोई नहीं जानता, पर यह स्पष्ट है कि रणवीर सिंह की सबसे बड़ी लड़ाई इस खूंखार विलेन से होने वाली है। जिसने सबसे बड़ा प्लान बनाया था।

'धुरंधर 2' में अकेले ही हमजा को अपनी लड़ाई लड़नी है, जिससे वो जंग लड़ेगा वो है मेजर इकबाल. यह किरदार अर्जुन रामपाल निभा रहे हैं, जो अपनी एक्टिंग से फैन्स को हमेशा इम्प्रेस करते रहे हैं। वो किरदार में पूरी तरह से घुल-मिल जाते हैं, उसे जीते हैं और एक ऐसी परफॉर्मेंस देते हैं, जो पूरी तरह से उनकी अपनी होती है। पार्ट 2 में रणवीर सिंह और अर्जुन रामपाल के बीच एक धांसू फेस ऑफ होने वाला है।

'किंग' के बाद अभिषेक हॉरर फिल्म में

अभिषेक बच्चन ने पिछले कई सालों में अलग-अलग जॉनर की फिल्मों के जरिए अपनी अदाकारी का लोहा मनवाया है। एक्टर बहुत जल्द सिद्धार्थ आनंद की फिल्म किंग में शाहरुख खान के साथ नजर आने वाले हैं। अभिषेक और सिद्धार्थ बहुत जल्द एक अगले प्रोजेक्ट में साथ आने वाले हैं। सिद्धार्थ आनंद और अभिषेक बच्चन 'किंग' के बाद एक हॉरर फिल्म में साथ काम करेंगे। सिद्धार्थ अपनी मार्फ्लिक्स बैनर के तहत इस हॉरर फिल्म का निर्माण करेंगे और उनके एक करीबी सहयोगी अभिषेक बच्चन अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन करेंगे।

अभी तक इसका टाइटल तय नहीं हुआ है। इस फिल्म को लोककथाओं पर आधारित हॉरर थ्रिलर बताया जा रहा है, जो एक भावनात्मक पिता-पुत्री के रिश्ते पर केंद्रित है। इंडियन हॉरर जॉनर में दर्शकों को एक अलग तरह का एक्सपीरियंस देने के लिए इसके वीएफएक्स पर काफी काम किया जाएगा। अभिषेक इससे भी पहले पिता-पुत्री के रिश्ते पर आधारित एक इमोशनल ड्रामा फिल्म 'आई वॉन टू टॉक' में नजर आए थे। ये फिल्म अमेजन प्राइम पर रिलीज हुई थी और सुजीत सरकार ने इसका निर्देशन किया था।

सिद्धार्थ के साथ अभिषेक का ये दूसरा कोलैबोरेशन होगा और पहली बार वो किसी हॉरर फिल्म में नजर आएंगे। फिल्म सितंबर 2026 से अपना प्रोडक्शन शुरू कर सकती है। वहीं बात अगर किंग की करें तो ये फिल्म क्रिसमस के मौके पर इसी साल रिलीज हो सकती है। इस फिल्म में दीपिका पादुकोण, सुहाना खान, रानी मुखर्जी, अनिल कपूर, अरशद वारसी, जयदीप हलावत, राघव जुयाल और अभय वर्मा भी नजर आएंगे।

'अर्धनारी नटेश्वरः अनान' का यूट्यूब प्रीमियर

मराठी और हिंदी भाषाओं में फीचर फिल्म 'अर्धनारी नटेश्वर : अनान' के यूट्यूब प्रीमियर और रिलीज की डब्ल्यूएसएंडब्ल्यू विजी प्लेक्स ने घोषणा की। यह फिल्म आध्यात्मिकता, संस्कृति और सामाजिक चेतना का संगम है। फिल्म की विषयवस्तु गरिमा, सशक्तिकरण और लैंगिक संवेदनशीलता है। फिल्म अभिनेता पंकज रैना ने कहा कि यह फिल्म इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि सिनेमा समकालीन सामाजिक मुद्दों को संबोधित करते हुए विरासत को कैसे संरक्षित कर सकता है। निर्माता हेमंत भाटिया ने कहा कि हमारा उद्देश्य महाराष्ट्र की सांस्कृतिक जड़ों का सम्मान करते हुए लैंगिक संवेदनशीलता पर संवाद स्थापित करने वाली फिल्म बनाना था।

फिल्म की अभिनेत्री सुखदा खांडकेकर के मुताबिक, मुझे इस सामाजिक उद्देश्य से प्रेरित फिल्म का हिस्सा बनकर बहुत गर्व है। मुझे उम्मीद है कि यूट्यूब प्रीमियर के माध्यम से फिल्म का संदेश व्यापक दर्शकों तक पहुंचेगा। जबकि, अभिनेता ओमकार शिंदे ने कहा कि मुझे उम्मीद है फिल्म को अखिल भारतीय और वैश्विक स्तर पर पहचान मिलेगी। फिल्म में लैंगिक संवेदनशीलता, करुणा और मानवतावाद का समकालीन संदेश है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह संदेश भारतीय प्रवासी समुदाय और विशेष रूप से महाराष्ट्र प्रवासी समुदाय तक पहुंचेगा। विश्वास है कि यूट्यूब प्रीमियर के माध्यम से यह संदेश विश्व भर में फैलेगा। फिल्म 'अर्धनारी नटेश्वर : अनान' शिव और शक्ति के दिव्य मिलन को दर्शाती है, जो संतुलन, समानता और सृष्टि के शाश्वत चक्र का प्रतीक है। सशक्त कहानी के माध्यम से, फिल्म लैंगिक संवेदनशीलता, सांस्कृतिक गौरव और आध्यात्मिक गहराई को उजागर करती है।

हिंदी फिल्मों में छाया नवरात्रि का माहौल

अशोक जोशी

इस साल मार्च का महिना यूं समझिए नारी सम्मान को ही समर्पित रहा। आठ मार्च को विश्व महिला दिवस गया ही था कि अगले सप्ताह से नवरात्रि का शुभारम्भ हो रहा है।

इसके साथ ही हिन्दू नव वर्ष और उत्सवी परंपरा को शुभागमन भी हो गया है। इसी त्यौहारी माहौल और धूमधाम के माहौल को हिन्दी फिल्मों में भी उल्लेखनीय रूप से शामिल किया जाता रहा है।

हिन्दी सिनेमा में नवरात्रि का उल्लेख फिल्मों के सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को दर्शाने, भावनात्मक गहराई जोड़ने और भक्तिमय कहानियों को कहने के लिए किया जाता है। कहीं गरबों की धूम तो कहीं दुर्गा पूजा के दृश्य तो कहीं मां दुर्गा के चमत्कारों पर आधारित 'फिल्मां से दर्शक की भावनाएं उमडने लगती है और यही सब कुछ फिल्म की सफलता का घटक भी बन जाता है। नवरात्रि साल का सबसे महत्वपूर्ण हिंदू त्योहारों में से एक है. जो पूरे भारत में बड़ी भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है.। इस पर्व को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूबसूरती से कैद किया गया है।

हिन्दी फिल्मों में नवरात्रि के दौरान होने वाले गरबा, डांडिया, और दुर्गा पूजा जैसे त्यौहारों और आयोजनों को दिखाया जाता है। 'जय संतोषी मां' जैसी फिल्में मां दुर्गा के चमत्कारों और भक्ति पर आधारित हैं, जो भक्तों के दिलों में भक्ति को बढ़ावा देती हैं। जबकि नवरात्रि और दुर्गा पूजा के दृश्य पात्रों के संघर्ष, मुक्ति और भावनात्मक यात्राओं को दर्शाते हैं। नवरात्रि से जुड़े लोकप्रिय गाने और नृत्य फिल्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। यही कारण है कि पिछले कुछ सालों में बॉलीवुड ने कई फिल्मों का निर्माण किया गया जो इस नवरात्रि को पूरी शिद्दत के साथ पर्दे पर पेश करती हैं.।

वैसे तो फार्मूला फिल्मों के सरताज मनमोहन देसाई ने अपनी 1979 की अपनी फिल्म सुहाग में नवरात्रि का सुंदर फिल्मांकन कर दर्शकों को मोहित कर चुके है। इस फिल्म में जब एंग्रेयंग मेन

अमिताभ ओ शेरा वाली गाते हैं और इसकी धुन पर रेखा थिरकती है तो सिनेमा हॉल में गरबे का भव्य और संगीतमय वातावरण निर्मित हो जाता है।अमिताभ की बहू. ऐश्वर्या राय और सलमान खान की साल 1999 की रोमांटिक फिल्म हम दिल दे चुके सनम का गरबा दृश्य और नवरात्रि का फिल्मांकन भी दर्शनीय था। ढोली तारो ढोल बाजे से निर्देशक संजय लीला भंसाली ने पर्दे पर गुजरात के नवरात्रि पर्व को सजीव कर दिया था। ये फिल्म गुजराती पृष्ठभूमि पर आधारित है। गुजरात में नवरात्रि का त्योहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस फिल्म का नाम है हम दिल दे चुके सनम. क्यों आई न आपको भी इस फिल्म की याद।

चेतन भगत के उपन्यास 'द 3 मिस्टेक्स ऑफ माई लाइफ' पर आधारित फिल्म 'काई पो चे' में भी नवरात्रि के दर्शन होते है। फिल्म के यादगार सीन में से एक नवरात्रि के नौ उत्सव के दौरान राजकुमार राव और अमृता पुरी पर फिल्माए गया गाना शुभारंभ की धुन पर गरबा और डांडिया खेलने को दिखाया। साल 2013 की रोमांटिक फिल्म गोलियों की रासलीला राम-लीला में भी इस नवरात्रि को काफी अच्छे तरीके से दिखाया गया है। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म में नवरात्रि को सजीव कर दिया गया था। लीला का किरदार निभाने वाली दीपिका ने नगाड़ा संग ढोल पर धमाकेदार परफॉर्मेंस दी थी।

सलमान खान के बहनोई आयुष शर्मा ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत फिल्म 'लवयात्री' से की। इस फिल्म की नायिका वरीना हुसैन थी। फिल्म का गाना चोगाड़ा जिस साल रिलीज हुआ था, उसी साल ये नवरात्रि का गरबा एंथम बन गया। देश के हर दुर्गा पंडाल में इस गाने की तेज धून ने सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया। ये आज भी उन गानों में से एक है, जिन्हें नवरात्रि के दौरान जरूर बजाया जाता है। सत्यप्रेम की कथा फिल्म सत्यप्रेम की कथा में कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी मुख्य भूमिका में हैं.। कहानी उस जोड़ी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो नवरात्रि के दौरान गरबा के दौरान सत्यप्रेम से मिले और कथा से प्यार करने लगे।

पत्नी, पत्नी और मैं...!

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

सु ''सुनो, अगर तुम राजनीति में जाना चाहती हो तो अब जा सकती हो।'' पत्नी से कहा।

''मतलब...? मैंने, ऐसा तुमसे कब कहा, और तुम होते कौन हो मुझे इजाजत देने वाले?'' पत्नी तुनक गई।

''कॉलेज में तुम यूनियन के चुनाव लड़ती थीं ना, इसलिए!'' याद दिलाया।

''बड़ी जल्दी याद आया, उस समय तो राजनीति के नाम से ही चिढ़ते थे और मुझसे शादी करने से भी कतरा रहे थे?'' पत्नी को भी याद है, गुजरा हुआ जमाना।

''जब आंख खुले, तभी सुबह होती है ना, तो अब सही। तुम चाहो तो फुलटाइम कर सकती हो, मेरी तरफ से छूट है।''

''जब गाना सीख रही थी तो तुम्हें कष्ट होता था कि नींद नहीं आती और अब राजनीति की सलाह दे रहे हो, ऐसा क्या बदल गया?'' उसने लगभग चीखते हुए कहा।

''कुछ नहीं, माहौल तुम्हारे लायक हो गया5 है, इसलिए सलाह दी।'' मैंने जवाब दिया।

''तो क्या अब चुनाव आयोग ही उम्मीदवार का खर्च उठाएगा या 'एक देश, एक चुनाव' नियम लागू हो गया है या दलों को चुनावी-बांड से धन नहीं मिलेगा या बगैर पैसे के हम जैसे खाली पर्स भी चुनाव लड़ सकेंगे? ऐसा क्या नया बदलाव आ गया है?'' वह समाचार-पत्र नहीं पढ़ती है तो खबर मुझे ही बताना होती है।

''ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ है, अच्छा, चलो बताओ, तुम राजनीति में क्यों नहीं गईं?''

''अब ये तुम्हारा कुनबा संभालती या सड़कों पर 'जिंदाबाद-मुर्दाबाद' करती, तुम्हें तो चाय तक छाननी नहीं आती है। कैसे चलता घर का काम?'' यानी उम्मीद तो है।

''यही बात है, अगर घर की जिम्मेदारी कोई संभाल लेता तो क्या तुम तब करती राजनीति?'' मन ही मन मुदित होने लगा था मन, क्योंकि उसे मेरा छिपा मकसद समझ आ जाता तो शक करने लगती।

''हां, यदि सत्ता-दल से टिकट मिलता तो चली भी जाती।'' थोड़ी निराशा थी आवाज में।

''तो अब भी देर नहीं हुई है, नीतीश कुमार के लड़के ने दो रोज पहले ही सदस्यता ली है पार्टी की, तुम भी पकड़ ही सकती हो कोई पार्टी तो, वैसे भी भाजपा वाले इनकार कहां करते हैं, जो चाहे सो आए। हां, यह बात अलग है भ्रष्ट को प्राथमिकता मिलती है।''

''तुम तो मतलब की बात बोलो, क्यों मुझे अब राजनीति में जाने का बोल रहे हो?'' वह सीधे पॉइंट पर आ गई।

''दरअसल, अभी महिला-दिवस के मौके पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता...''

''वही ना, ए आइ क्यू वाली...?'' गलत ही सही, याद तो है।

''हां वही ए क्यू आइ वाली..., उन्होंने कहा है कि जिस तरह पुरुष नेता की पत्नी होती है, घर संभालने के लिए, वैसे ही महिला नेता की भी एक अदद पत्नी होनी चाहिए ,जो उनकी वैसी ही देखभाल कर सके, जैसे नेता की पत्नी करती है। रेखाजी बता रही थीं कि शपथ के लिए साड़ी तय करना मुश्किल था, पति से उम्मीद नहीं कर सकते, पत्नी होती तो जरूर मदद करती और अपने हाथ से तैयार कर देती, बाकी घर के काम भी संभालती और महिला नेता को घर झांकना नहीं पड़ता।'' कह कर थक गया तो हांफने लगा!

'तो ऐसा हो रहा है क्या?'' उसने खुश होते हुए पूछा।

''आगे-पीछे हो ही जाएगा, जैसे महिला रिजर्वेशन!''

''अच्छा, तो अब समझी, दरअसल तुम्हें मेरी राजनीति में दिलचस्पी इसलिए हो रही है कि अब तुम्हारा मुझ से मन भर गया है, तुम सौतन लाना चाहते हो?'' कहते हुए उसकी आंखों की पाइप लाइन खुल गई।

''इसमें मेरा क्या है, ये तो तुम पत्नी, तुम्हारी पत्नी के बीच रहेगा, मैं कहां से आ गया!'' घबरा गया था मैं।

''इतने भी भोले सनम मत बनो, जानती हूं, तुम्हारी सारी घांई पाई, मैं तो दिन-रात बाहर रहूंगी और तुम यहां गुलछर्रे उड़ाओगे मेरी पत्नी के साथ...! मुझे राजनीति में भेजने का इतना ही शौक है तो खुद कहो, हां घर संभाल लूंगा, पत्नी की तरह, वो तो तुमसे होगा नहीं!''

अब मेरे बोलने की कोई गुंजाइश कहां थी कि मुझे तो अंदाजा भी नहीं था कि वह इतना दूर का भी सोच सकती है।

''मैं तो तुम्हारी पत्नी की मदद ही करूंगा ना, मेरा क्या इंटरेस्ट हो सकता है?'' यही सूझा मुझे।

''तो फिर मेरी मदद क्यों नहीं करते कभी, मेरी पत्नी की मदद करोगे, लेकिन पानी का गिलास नीचे भी रखना हो तो मुझे आवाज लगाते हो, रहने दो, तुम्हारा मुझ से मन भर गया है, साफ कहते क्यों नहीं।'' फिर क्या हुआ, नहीं बता सकता, क्योंकि नींद खुल गई थी और पत्नी की आवाज आ रही थी, 'सारे घोड़े बिक गए या कुछ बचे हैं?' मुझे वीकेंड पर ऐसे उलटे-सीधे सपने क्यों आते हैं, नहीं पता।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

'समतल कोई ज़मीन नहीं: आलोक त्यागी की किताब का आना

बे हद खुश होने वाली बात है कि गज़ल की दुनिया में एक बेहतरीन ग़ज़लकार, नामचीन ग़ज़लकार के पुत्र एक किताब 'समतल कोई ज़मीन नहीं' लेकर आ रहे हैं। (हालांकि प्रकाशन की दुनिया में वो देर से आये, पर ग़ज़ल लंबे समय से कह रहे हैं)। मैंने उनमें एक संकोच को भावना देखी कि उन्हें लगता था इतने मशहूर गज़लकार दुष्यंत कुमार के पुत्र होकर वो पाठकों की नज़र में खरे ना उतर पाये तो? (ये सदियों से चला आ रहा है कि पिता पुत्र का एक ही शौक या प्रोफेशन में होना तुलना की श्रेणी में खड़ा कर देता है)। मित्रों और परिवार के आग्रह के चलते 'आलोक दुष्यंत' को ये संग्रह निकालना ही पड़ा। औरंगाबाद महाराष्ट्र में इसका लोकार्पण हाल ही में हुआ। पुस्तक का प्रकाशन 'श्वेतपर्णा' नई दिल्ली से हुआ। पुस्तक अद्भुत है। आलोक जी ने प्रसिद्ध गजलकार के पुत्र होने का पूरा दायित्व निभाया है। आज दुष्यंत जी होते तो आलोक जी के इस कारनामे पे गौरवान्वित होते।

आलोक जी के इस संग्रह में दांये हाथ के सफहे पे पूर्ण ग़ज़ल है, बांयें हाथ पे एक मजबूत शेर कहन को रोचक बनाता है। फ्लैप पर चार बुद्धिजीवियों ने समीक्षा की है। लब्धप्रतिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई लिखते है, ''यह आलोक की काव्य ज़मीन है, जहाँ इश्क़ का भी कालाबाज़ार है। बद से बदतर किसानों के हालात है तंगदस्ती है, मुफ़्लिसी है और शायर की निगाह के सामने बदलता समाज है जिसके रोएँ-रेशे में वह उतरता है।''

आलोक जी के आग़ाज़ में पहला शेर यूँ है-

एक ज़िद्दी ख़्वाब उनकी पैरवी करता रहा
शब मेहरबाँ थी सहर को देर तक रोके रही।

व्यवस्था के प्रति आलोक जी ने बेहतरीन शेर कहे हैं-

सोचता हूँ कि उनके दिल यारों, जाने किस चीज़ के बने होंगे
जिनकी ऊँची इमारतों के तले, मुँह से छीने हुये निवाले हैं

और, राजनीति के संदर्भ में-

ख़्वाब फिर से दिखा रहे हैं वो, इस दफ़ा नयी कसम खा के

कौन पिछले हिसाब मांगेगा, लोग भी कितने भोले भाले हैं।

वरिष्ठ ग़ज़लगो और आलोचक ज़िया ज़मीर साहब कहते है कि आलोक जी की शायरी सिर्फ समाज की ना हमवारी, रिश्तों के दुख का बयान, सच को सच कहने और झूठ को आईना दिखाने वाली शाइरी ही नहीं है। इसमें दिल के एक कोने में छुपा वो पाक जज़्बा भी है। कहते हैं शेर कहने के लिये नहीं कहे गये हैं, ऐसा लगता है शाइर जिस अहसास से गुज़र रहा है उस एहसास को लफ़्ज़ो में मुंतक़िल कर दिया गया है।

आलोक जी ने अपनी साहित्यिक रचनात्मकता की शुरूआत ज़रूर देर से की पर वे यथार्थ को लेकर काफ़ी खोजी रहे जैसे-

सब कर रहे जुदा-जुदा क़ातिल का इंतज़ार
दहशत का यार इन दिनों अच्छा कारोबार।

और

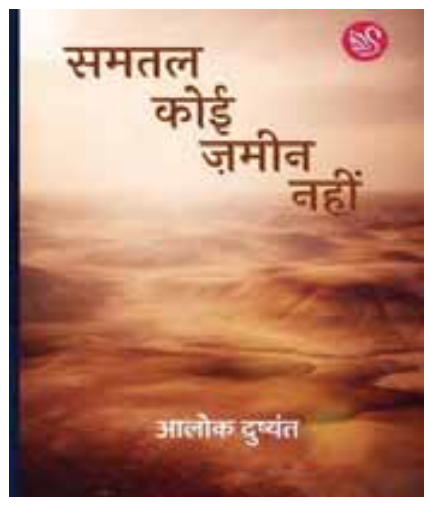

अब सिकुड़ते मेड़ वाले चक में है खेती मुहाल,
और ख़बरें हैं कि सारे गांव होंगे मालामाल।

इश्क़ के शेर उन्होंने बड़े लुभावने और शरारती तरीके से प्रस्तुत किये हैं, जैसे-

तू तो कितना शरीफ़ था रे दिल,
तुझको इस उम्र में मचलना था?

और

जिंदगी इश्क़ में गुज़ारी है
दर्द से अपनी रिश्तेदारी है।

लेखन में इश्क़ और व्यवस्था के प्रति उनका एक अजीब सा आकर्षण दिखाई देता है। वरिष्ठ ग़जलकार एवं पूर्व डीजीएम? एफसीआई अशोक रावत कहते हैं, ''आलोक जी के ग़ज़लों के अनेक शेर अपने बेहतरीन कथ्य और कहन के कारण आपको थम कर पढ़ने के लिए विवश करते हैं। इस संग्रह को आप जब पढ़ेंगे तो सहमत होंगे।''

वे बताते हैं कि बैंक की नौकरी के आख़िरी चार सालों में मुझे कॉरपोरेट मैगिजन के संपादन की जिम्मेदारी मिली और खूब पढ़ने-लिखने का मौक़ा भी मिला। तब मन बनाया कि रिटायर होने पर एक ग़ज़ल-संग्रह निकालूँगा। पर जब-जब भी ये विचार मन में आया, तब-तब पापा का ग़ज़लों से जुड़ा क़द, उनका नाम और उनकी शोहरत सामने आ खड़े हुए। बड़ा सवाल यही कि कहीं मैं उनके नाम को धूमिल तो नहीं करूँगा? यहाँ मुझे कहना होगा कि मेरी पत्नी ने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने पिता कमलेश्वर जी के लेखन को अच्छे-बुरे दौर से गुज़रते देखा था। और वो जानती थी कि 'अच्छे लेखन' की पहली शर्त है 'नियमित लेखन।'

वरिष्ठ ग़ज़लकार एव पूर्व एडिशनल कमिश्नर वाणिज्य कर कमलेश भट्ट 'कमल' लिखते हैं, ''आलोक त्यागी हिंदी ग़ज़ल के 'आदि पुरूष' दुष्यंत कुमार के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में उनकी वंश-परपंरा के वाहक ज़रूर हैं, लेकिन ग़ज़लों में वे अपवादो को छोड़कर अपने ढंग और मिज़ाज के ग़जलकार हैं। आलोक जी ने अपना पहला शेर, 'हर हक़ यहाँ पे आधा-अधूरा है इस तरह। कागज़ पे घर तो मिल गया, कब्ज़ा नहीं मिला' वर्ष 1988 में तब लिख लिया था तब वे 33 वर्ष के थे। उनकी रचनाएं पिछले तीन दशकों में बीच-बीच में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हाती रही हैं। बीच-बीच में वे टी.वी., रेडियो कार्यक्रमों में हिस्सा लेते रहे हैं।''

दुष्यंत जी व कमलेश्वर जी की विरासत संभालते हुए आलोक जी के लेखन में धैर्य और परिपक्वता देखी जा सकती है। इश्क़ के मिजाज की एक ग़जल है जिसमें सारे शेर मुहब्बत पर ही हैं।

शनिवार 14 मार्च 2026 को दुष्यंत जी की परंपरा का निर्वहन करने वाले आलोक दुष्यंत की पहली ग़ज़ल पुस्तक का भोपाल में वरिष्ठ साहित्यकार आलोचनक विजय बहादुर सिंह, इकबाल मसूद, पंकज सुबीर, डॉ. आजम द्वारा विमोचन किया गया। हम भी जानते है सैनिक स्कूल से पढ़े, यूनिवर्सिटी टॉपर, दुष्यंत जी की धरोहर के हक़दार (जो उनके खुद के प्रयासों से हासिल हुई, उनके बेटे होने के नाते से नहीं) दूरदर्शन के गलियारे पार करते, एअर इंडिया का सफ़र तय करते, बैंक की मकबूल नौकरी के साथ पठन, पाठन, लेखन, महफ़िलों में गजल कहने का शौक रखते आलोक जी को थोड़ी देर ज़रूर हुई पर खैर दैर आयद दुरस्त आयद। तो माजरा क्या है? 'समतल कोई ज़मीन नहीं' ये पुस्तक का उनवान है जो बहुत कुछ साझा करता है, मसलन, दुर्गम रास्तों पर चलकर ही ग़ज़ल कही जाती है-

कभी शिखर तो कभी घाटियाँ थी
राहगुजर में मेरे नसीब में समतल कोई ज़मीन नहीं।

खैर, बाकी ग़ज़लें, बातों से रूबरू हो ज़ाइएगा, पुस्तक पढ़ने के बाद। कुल मिलाकर आलोक जी मजबूती से सफल और अपनी अलग पहचान बनाते नज़र आए। नये संकलन की ढेरों बधाईयां।

बेर से लदा पेड़ देख बचपन लौट आना

स्मृतियां

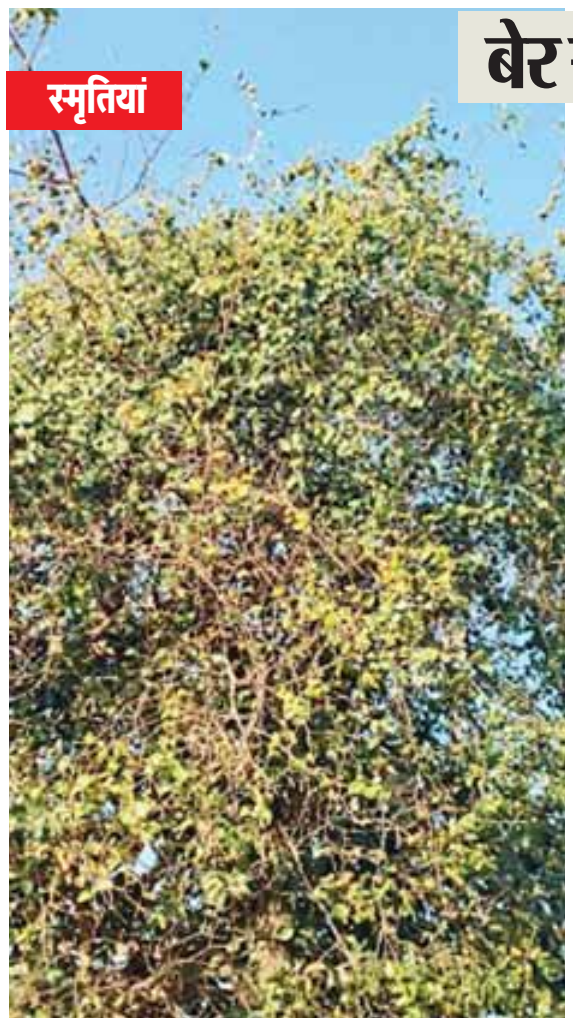

बाजार में फल वाले की दुकान ठेलेगाड़ी में बेर देखना अलग बात है और बेर के पेड़ पर देखना और अलग बात है। सुवासरा से 7 किलोमीटर दूर ग्राम घसोई पास हरणेश्वर महादेव जी का मंदिर पेड़-पौधे और प्राकृतिक वातावरण के बीच स्थित है। मैं अकसर वहां जाता रहता हूं। दोपहर बाद वहां अच्छा एकांत मिल जाता है। सोमवार को मैं बहुत कम जाता हूं। आज भी दोपहर की चाय पीकर निकला, भगवान के दर्शन किए तथा आसपास के पेड़-पौधों से रुबरु होने चला गया। पलाश अपनी केवड़ी से अपनी उपस्थिति का अहसास करवा रहा था। अन्य पेड़ निर्विकार भाव से खड़े थे। तभी मेरी निगाह बेर के फलों से लदे इस पेड़ पर गई। मुंह में पानी से ज्यादा मस्तिष्क में बचपन छलछलाया। मैं क्या कोई भी होता, बेर से लदा पेड़ उसे बचपन जरुर याद दिला देता है। जिन्हें इसे देखकर बचपन न याद आए तो समझो वो धनी होते हुए भी निर्धन है।

बेर चीज़ ही ऐसी है। बेचारे को कवियों ने असम्मानित किया। यदि रहीम बेर खाते तो तो शायद नहीं लिखते, कह रहीम कैसे निभे कैर बेर को संग। वे बोलते, रस आपने उनके फाटत अंग। केले के पौधे को देख न बचपन याद आएगा, न मुंह में पानी आयेगा। न वो उतना अधिकार देगा कि पत्थर और डंडा फेंको तो उसके बदले में फल दे।

आज न जाने किस्म-किस्म के बेर हैं पर स्वाद वैसा नहीं। किसी पूर्वज द्वारा बचपन में खाये बेर की गुठली बिना किसी राजकीय परवरिश के पेड़ के रुप विकसित होती है। जब फल आते फिर उसकी पूछ होने लगे और स्वाद हाइब्रीड बड़े आकार बेरों को अलग बिठाए।

आज इस बेर लदे पेड़ को देख सचमुच मेरा बचपन याद आ गया। जब चौमहला से मगरै के स्कूल में छठीं-सातवीं में पढ़ने जाते। रास्ते में सकस महाराज के पास रोड़ पर भंवर सिंह बा के खेत पर बेर का ऐसा पेड़ था। वह हमें समय पर स्कूल नहीं जाने देता तथा स्कूल से घर नहीं आने देता। जब तक पढ़े खूब खायें। आज जब चौमहला जाता हूं तो पाता हूं कि क्रांकीट के जंगल ने बेर और खेत को निगल लिया है। शोरुम और दुकानें खुल गई हैं। बहुतेरे स्कूलों के पास बुढ़ी अम्मा बेर लिए बैठी रहती थी। पाऊच के पैक, नमकीन, चिप्स, कुरकुरे, आलू गुजिया, महंगे बिस्कीट, चॉकलेट ने अम्मा के बैरो को खारिज कर दिया है। हम सभ्यता में कितनी अमृत तुल्य चीजों को खारिज करते जा रहे हैं।

खैर, मैं झुका और नीचे गिरे तीन चार पके, अधपके लाल-पीले, हरे बेर को उठाया और भगवान शिव का प्रसाद समझ खाया बिना धोये खा लिए। बेर को भी खुशी हुई होगी मुझे तो बहुत अधिक हुई। भगवान शिव वृक्ष को सही सलामत रखे क्योंकि प्रकृति ही ईश्वर का सच्चा स्वरूप है।

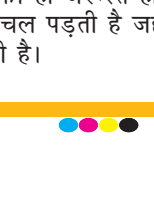

फोटो एवं आलेख
बंसीलाल परमार

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

ऐसी भी बीमारी... कि बदज़ुबान हो जाती है!

जब माइकल बी जॉर्डन और डेलरॉय लिंडो बाफ्टा अवार्ड्स देने स्टेज पर आए तो ऐसा शब्द बोला गया, जो गाली से भी बदतर है। इसके लिए बीबीसी को माफी मांगनी पड़ी, क्योंकि इसे रिकॉर्डिंग से हटाया जा सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।

अभी बात है उस इंसान की, जिसने यह शब्द भरी सभा में सबके सामने कहा। यह हैं जॉन डैविडसन, जिन्हें टुरेट सिंड्रोम है, जिसकी वजह से उनके हाथ-पांव में अनचाही हरकत होती रहती है, लेकिन इसके अलावा इस बीमारी में बिना सोचे-समझे गालियां निकल जाती हैं।

जॉन डैविडसन ने बीमारी के बारे में समझाने के लिए बेहिसाब काम किया है और ब्रिटिश सरकार ने उपाधि दी है। जॉन की जिंदगी पर फिल्म है - **'आइ स्वेयर।'** इस फिल्म का शुरुआती सीन है, जहां जॉन को रानी एलिजाबेथ के सामने जाना है, लेकिन कमरे में जैसे ही दाखिल होते हैं, सबसे पहले रानी को ही गाली देते हैं, लेकिन प्रोग्राम बिना किसी अड़चन के पूरा होता है और फिल्म के अंत में उस समारोह का वीडियो भी देख पाते हैं। यह फिल्म बाफ्टा अवार्ड के लिए न सिर्फ नामांकित हुई, बल्कि बेस्ट एक्टर का अवार्ड भी रॉबर्ट अरामायो को मिला। **'आइ स्वेयर'** ऐसी फिल्म है, जो मुश्किल बीमारी पर काबू और हिम्मत वाले की सच्ची जिंदगी की दिल छू लेने वाली कहानी सुनाती है। फिल्म न सिर्फ बात करती है बल्कि बीमारी के परदे में समाज की सोच पर हमला करती है, भावुकता के कवच को भेदती है और साथ ही उस समाज के तौर-तरीकों और शालीनता पर कमेंट करती है, जिस समाज में हम सब विचार अपने तक ही रखते हैं।

इस फिल्म में रॉबर्ट अरामायो की शानदार अभिनय है। यह बीमारियों के बारे में बहस से जरूरी सवाल उठाती है, साथ ही यह भी बताती है कि जॉन या उनके साथ कैसे, कब और किस तरह हंसना है। जॉन जोर देकर कहते हैं कि टूरेट सिंड्रोम कोई अपंगता नहीं है, बात करने का दिलचस्प तरीका है। फिल्म में जब जॉन कोर्ट में पेश होता है तो टॉमी उसकी तरफ से गवाही देता है कि इसे चाहे जैसे भी बताया जाए, जॉन इन बुरे शब्दों को मर्जी से नहीं कह सकता, क्योंकि इसकी वजह से उस पर हमला होता है, उसे बदनाम किया जाता है, वह लगभग नौकरी के लायक नहीं रह जाता और पुलिस सेल में डाल दिया जाता है।

यह ऐसी फिल्म ऐसे बीमारों के साथ न्याय करती है, बिना किसी रोक के इनका सम्मान करती है। फिल्म के सबसे अच्छे सीन में, बीमारी से जूझ रही लड़की से कार शेयर करता है। एक-दूसरे को बुरा-भला कहने के करीब एक मिनट बाद दोनों चुपचाप मुस्कुराते हैं। पूरी फिल्म प्यारी, मज़ेदार और दिल छूने वाली है। फिल्म नेटफ्लिक्स पर है, ज़रूर देखिए और ऐसे मुद्दों पर बात करिए। जॉन को डॉटी की ही जरूरत होती है और जिंदगी उस रास्ते चल पड़ती है जहां दुनिया शुक्राना अदा करती है।